अन्तरा शब्दशक्ति

शब्द से संवेदना तक,
संवेदना से विचार तक और
विचार से परिवर्तन तक।

अन्तरा शब्दशक्ति – साहित्यिक वेब अंक (अक्टूबर 2026)

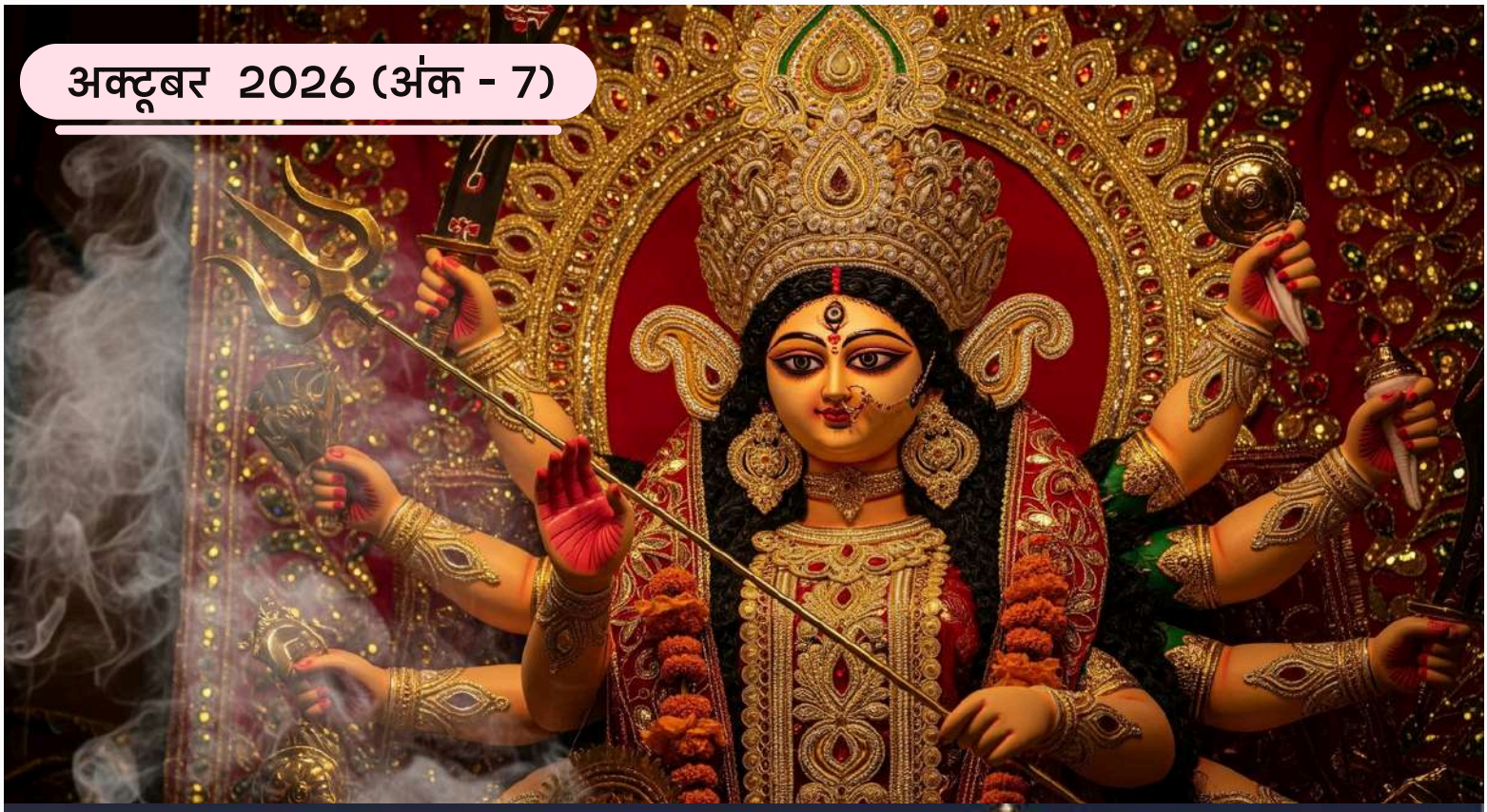

रचनाएँ प्रेषित करने हेतु संपर्क सूत्र :- antrashabdshakti@gmail.com | 9009423393 / 9009465259

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

साहित्यिक वेब अंक
1 से 31 अक्टूबर 2026
(मासिक साझा संकलन)

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

संपादक की कलम से

अक्टूबर – सृजन की निरंतरता, विचारों की परिपक्वता और साहित्यिक संकल्प का समय

अक्टूबर का महीना अपने साथ बदलते मौसम की हल्की दस्तक, त्योहारों की रौनक और जीवन में नई ऊर्जा का संदेश लेकर आया। प्रकृति के परिवर्तित होते रंग हमें यह अनुभव कराते हैं कि परिवर्तन ही जीवन का शाश्वत सत्य है। समय बदलता है, परिस्थितियाँ बदलती हैं, विचारों के आयाम बदलते हैं, लेकिन सृजन की चेतना यदि जीवंत हो तो उसकी यात्रा कभी नहीं रुकती। साहित्य भी इसी निरंतरता का नाम है, जो समय के साथ स्वयं को अभिव्यक्त करता हुआ समाज को नई दृष्टि प्रदान करता है।

अन्तरा शब्दशक्ति के लिए अक्टूबर का महीना भी साहित्यिक सक्रियता और रचनात्मक सहभागिता का महत्वपूर्ण पड़ाव रहा। हमारे लिए साहित्य केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि अनुभूतियों, संवेदनाओं, विचारों और सामाजिक सरोकारों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। प्रत्येक रचनाकार अपने अनुभवों की पूँजी लेकर आता है और अपनी लेखनी से उस अनुभव को सामूहिक चेतना का हिस्सा बनाता है। यही विविधता अन्तरा शब्दशक्ति की वास्तविक शक्ति है।

हमारा प्रयास सदैव रहा है कि प्रत्येक रचनाकार को अपनी अभिव्यक्ति के लिए एक सम्मानजनक मंच मिले। यहाँ रचना का मूल्यांकन केवल उसकी लोकप्रियता से नहीं, बल्कि उसके भावबोध, विचारों की प्रामाणिकता और सामाजिक उपयोगिता से भी होता है। कविता हो या कहानी, आलेख हो या संस्मरण, व्यंग्य हो या बाल साहित्य, हर विधा अपने भीतर एक अलग संसार समेटे रहती है। इन सभी संसारों को एक सूत्र में पिरोना ही हमारी साहित्यिक यात्रा का उद्देश्य है।

आज साहित्य के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं। तेजी से बदलती जीवनशैली, डिजिटल माध्यमों का बढ़ता प्रभाव, मानवीय संबंधों में आती दूरी और संवेदनाओं का सीमित होता दायरा हमें आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है। ऐसे समय में साहित्यकार का दायित्व और भी बढ़ जाता है। उसे केवल समय का साक्षी नहीं, बल्कि समय से संवाद करने वाला सजग हस्ताक्षर बनना होगा। लेखनी में संवेदना हो, विचारों में स्पष्टता हो और अभिव्यक्ति में मानवीय सरोकारों के प्रति प्रतिबद्धता हो, तभी साहित्य अपनी सार्थक भूमिका निभा सकता है।

अन्तरा शब्दशक्ति की पहचान उसकी सामूहिकता और सहभागिता में निहित है। यहाँ स्थापित और नवोदित, वरिष्ठ और युवा, सभी रचनाकारों के लिए समान आत्मीयता का भाव हमारी प्राथमिकता है। हमारा विश्वास है कि किसी भी साहित्यिक मंच की ऊँचाई केवल प्रकाशित रचनाओं की संख्या से नहीं, बल्कि उससे जुड़े रचनाकारों के विश्वास, पारस्परिक सम्मान और साहित्य के प्रति समर्पण से निर्धारित होती है।

आगामी समय में भी हमारा संकल्प है कि साहित्यिक गतिविधियों को अधिक व्यापक बनाया जाए, नई प्रतिभाओं को प्रोत्साहित किया जाए और हिंदी साहित्य की विविध विधाओं को पाठकों तक पहुँचाने के नए अवसर निर्मित किए जाएँ। हम चाहते हैं कि अन्तरा शब्दशक्ति केवल रचनाओं के प्रकाशन का माध्यम न रहे, बल्कि विचारों के आदान-प्रदान, साहित्यिक संवाद और रचनात्मक विकास का ऐसा परिवार बने, जहाँ प्रत्येक शब्द को सुनने वाला मन और प्रत्येक रचनाकार को समझने वाली दृष्टि उपलब्ध हो।

अक्टूबर हमें यह संदेश देता है कि उत्सव केवल कैलेंडर की तिथियों में नहीं होते, वे हमारे भीतर भी घटित होने चाहिए। जब किसी की लेखनी को सम्मान मिलता है, किसी नए रचनाकार को पहचान मिलती है, किसी विचार को पाठक का मन मिलता है और कोई रचना किसी के जीवन को नई दिशा देती है, तब साहित्य का वास्तविक उत्सव मनाया जाता है।

आइए, हम सब मिलकर शब्दों की इस यात्रा को और अधिक अर्थवान बनाएँ। अपने सृजन से समाज में सकारात्मकता, संवेदना और विचारशीलता का प्रकाश फैलाएँ। क्योंकि शब्द तभी सार्थक होते हैं, जब वे मन से निकलकर मन तक पहुँचते हैं।

कलम चलती रहे, विचार खिलते रहें और अन्तरा शब्दशक्ति का यह साहित्यिक परिवार निरंतर नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करता रहे, यही हमारी कामना और संकल्प है।

रचनाकारों से आत्मीय आग्रह

अन्तरा शब्दशक्ति परिवार के सभी सम्मानित रचनाकारों से आग्रह है कि वे अपनी मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएँ नियमित रूप से प्रेषित करें। कविता, गीत, ग़ज़ल, कहानी, लघुकथा, आलेख, संस्मरण, व्यंग्य, बाल साहित्य एवं अन्य साहित्यिक विधाओं की रचनाओं का स्वागत है।

कृपया रचना के साथ अपना संक्षिप्त परिचय, पूरा नाम, निवास स्थान एवं संपर्क नंबर अवश्य भेजें। रचनाएँ स्पष्ट एवं यूनिकोड हिंदी फॉन्ट में टाइप करके ही प्रेषित करें।

★ आपकी लेखनी हमारे मंच की पहचान है। ★
आइए, शब्दों के माध्यम से साहित्य की इस यात्रा को और समृद्ध बनाएँ। आपका सृजन, आपकी सहभागिता और आपका विश्वास ही अन्तरा शब्दशक्ति की सबसे बड़ी पूँजी है।

1/10/2026 से 31/10/2026 तक वेबअंक में प्रकाशित रचनाकारों की सूची

01.10.2026
1. डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई
2. पंकज 'जुगनू'
3. योगी नारायण नाथ
4. नवीन माथुर पंचोली

02.10.2026
1. डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई
2. दिलीप आचार्य "सोमेश्वर"
3. आशीष कुमार रस्तोगी
4. किशोर छिपेश्वर "सागर

03.10.2026
1. डॉ. प्रीति समकित सुराना
2. निक्की निषाद

04.10.2026
1. मुकेश कुमार सिन्हा

05.10.2026
1. उद्देश्य तिवारी 'उदय'
2. अदिति रूसिया
3. पद्मा मिश्रा

06.10.2026
1. शिवशंकर दुबे (गंगेले)

07.10.2026
1. सोनम लड़ीवाला
2. राधा गोयल
3. विशाखा सिंघल
4. शरद कोकास

08.10.2026
1. अदिति रूसिया
2. नफे सिंह योगी
3. डॉ. अमृता शुक्ला

09.10.2026
1. नंदिता तनूजा
2. पद्मा मिश्रा
3. नीलचित्रा व्यास
4. अर्विना गहलोत

10.10.2026
1. ख़ुशी झा
2. आराधना श्रीवास्तव

11.10.2026
1. आचार्या शिखा चंदेल
2. डॉ. प्रीति समकित सुराना

12.10.2026
1. महेन्द्र तिवारी

13.10.2026
1. शेखर "अस्तित्व"
2. अरुण कुमार झा
3. उमेश सिंह

14.10.2026
1. डॉ. आशु जैन
2. नफे सिंह योगी
3. ऊषा नौगरहिया

15.10.2026
1. आशा श्रीवास्तव
2. सीता गुप्ता
3. चंद्रकांता अग्रवाल

16.10.2026
1. भाव पल्लवन
2. निकिता अग्रवाल
3. मीना विवेक जैन
4. डॉ. प्रीति समकित सुराना

17.10.2026
1. डॉ प्रीति समकित सुराना

18.10.2026
1. महक छाबड़ा
2. मंजू सरावगी
3. ख़ुशी झा
4. जगदीश पंकज

19.10.2026
1. प्रमोद नारायण मिश्र
2. राहुल आर्यन
3. सत्येन्द्र मण्डेला

20.10.2026
1. डॉ. प्रीति समकित सुराना

21.10.2026
1. नवनीता कटकवार शुक्ला
2. डॉ. आशु जैन
3. चंद्रकांता अग्रवाल
4. पद्मा मिश्रा

22.10.2026
1. डॉ. प्रीति समकित सुराना

23.10.2026
1. सीता गुप्ता
2. उमेश गहलोत
3. चंद्रकांता अग्रवाल

24.10.2026
1. आचार्या शिखा चंदेल
2. साधना छिरोल्या

25.07.2026
1. डॉ. प्रीति समकित सुराना

26.07.2026
1. डॉ. नवनीता दुबे नूपुर
2. राधा गोयल

27.07.2026
1. मुकेश कुमार सिन्हा
2. शिवशंकर दुबे (गंगेले)

28.07.2026
1. मनोज जैन
2. पुष्पा अरविंद शर्मा
3. निक्की निषाद

29.10.2026
1. सुषमा अग्रवाल
2. आराधना श्रीवास्तव

30.10.2026
1. हेमलता शर्मा
2. निर्मल रॉय
3. वाणी गोलछा

31.10.2026
1. जाह्नवी मालवेकर
2. मुकेश दुबे

रचनाएँ भेजने हेतु विवरण

रचना पूर्णतः मौलिक एवं अप्रकाशित हो।
भाषा, व्याकरण एवं शिल्प की शुद्धता का विशेष ध्यान रखें।रचना के साथ संक्षिप्त साहित्यिक परिचय तथा स्पष्ट फोटो संलग्न करें।
संपादकीय निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा।

सादर
डॉ. प्रीति समकित सुराना
प्रधान संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
गुरुवार, 1 अक्टूबर 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

दिवस मनाने होंगे सार्थक

दिवस तो
तभी सार्थक हैं
जब भरपूर आत्ममंथन कर
इनके विषय में सोच कर
उसे कार्यान्वित किया जाए,
तीनों ही बड़े
संवेदनशील विषय
बेटी/नदी और पर्यटन,
घर में बेटी है
उसे समझदार/सक्षम/सशक्त
बनाने में हर कदम पर
उसका साथ निभाती हूँ
ताकि वो इस परंपरा को
अपने आसपास की बेटियों को
उड़ने के लिए पंख देने में निभाए,
नाली-नालों में
नहीं डालती कभी कूड़ा
ताकि इनमें बहने वाला पानी
अन्ततः जब नदियों में जाकर मिले
तो नदियों को स्वच्छ रखने में
मेरा गिलहरी सा किया कर्म
नदी को बूँद भर चिंता से मुक्त करे,
जब स्वयं को
समेटने का आता है समय
आयु के थपेड़े देने लगते हैं
तब देह से दुरूह होने लगती हैं यात्राएँ
पर मन तो उड़ कर
जाने कहाँ-कहाँ की यात्राएँ
नित्य करता रहता है
तो इसी तरह मनता है
अपना तो बेटी/नदी/पर्यटन दिवस,
बेटियाँ समझदार बन
सपनों की उड़ान भरें
चाहतें और होड़ पर कसें लगाम
रह सकें सुरक्षित
जंगल और नदियों के
नैसर्गिक स्वरूप,
पर्यटन को जाएँ तो अपनी
विरासतों के
स्वरूप को कुरूप ना करें
अंकित करके अपने प्रेम-चिह्न
तभी बची रहेंगी
बेटियाँ/नदियाँ और पर्यटन
दिवस मनाने होंगे सार्थक
तो आइए शुभारंभ करें क्या?

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

मन भर गया है ज़िंदगी से

मन भर गया है ज़िंदगी से,
क्या हासिल हुआ बंदगी से।

कोई ख़्वाब में भी न दस्तक दे,
थक गया हूँ हर ताज़गी से।

मान लिया सभी को अपना,
यही ख़ता हुई सादगी से।

उम्मीद की कोई शाख़ न बचे,
पत्ते झरते हैं अब ख़ामुशी से।

हमने ख़ुद को खो दिया आख़िर,
एक चेहरे की दिल्लगी से।

घर भी वीरान, दैर भी ख़ामोश,
क्या मिला इतनी आशिक़ी से।

"जुगनू' लौट चलें अब ख़ुद में,
क्या मिला तुझे इस रोशनी से।

पंकज 'जुगनू'

कोहरे से ढकी यात्रा

कोहरे से ढकी यात्रा
घने कोहरे के रेशमी पर्दे के पीछे
सड़क की आँखें आज ओझल हो चुकी हैं,
मोड़ों ने खो दिया है अपनी मंज़िल का ज्ञान।
हम अज्ञात पगडंडियों पर आगे बढ़ रहे हैं
जहाँ न अतीत के कोई निशान साफ़ हैं,
न ही भविष्य का कोई सुस्पष्ट प्रकाश।
धुंधली हवा के इस शीतल स्पर्श में
जब दृश्य अदृश्य हो गए, तो स्पर्श ही चेतना की भाषा बनी।
उंगलियों के उलझते ही जन्मी एक आदिम अग्नि,
जहाँ देह ही अस्तित्व का एकमात्र प्रमाण बन गई।
इस मिलन में पाप-पुण्य की कोई सीमा न रही,
तृष्णा से परे, यह अज्ञान को चीरता एक दार्शनिक सेतु बना,
जहाँ चेतना और शरीर की सीमाएँ मिट गईं।
आगे का रास्ता अब भी अस्पष्ट ही सही,
पर अब हमें खो जाने का कोई डर नहीं,
क्योंकि हमने समझ लिया है—
यात्रा का सौंदर्य मंज़िल पाने में नहीं,
बल्कि इस अनिश्चितता के बीच
अपने भीतर की गर्माहट महसूस करने में है।
हम बढ़ रहे हैं आगे, कोहरे से ढकी इस यात्रा में,
अपनी ही आंतरिक ज्योति के सहारे।

योगी नारायण नाथ

ग़ज़ल

तीर लगते नहीं निशाने तक।
पाँव उठते नहीं ठिकाने तक।

उन्हें भी रोकना नहीं आता,
हम ठहरते नहीं बुलाने तक।

डूबते तो सभी ने देखा पर,
हाथ बढ़ते नहीं बचाने तक।

ताश के घर-महल बनाते हो,
ये संभलते नहीं जमाने तक।

आज रिश्तों का हाल है ऐसा,
ये चलते नहीं निभाने तक।

नवीन माथुर पंचोली

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
शुक्रवार, 2 अक्टूबर 2026

गांधी जयंती....

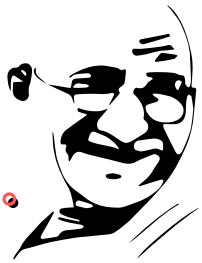

आज
गांधी जयंती है
देश भर में
जगह-जगह
समारोह-सभाएँ
हो रहीं हैं
श्रद्धांजलि
अर्पित करने की
होड़ा-होड़ी में
धुआँधार
भाषण दिए जा रहे हैं
कहीं
गांधी का बचपन
कहीं यौवन
कहीं खादी
कहीं स्वदेश प्रेम
गाया जा रहा है
तो कहीं
गांधी सिद्धांतों-सेवाओं पर
प्रकाश डाला जा रहा है।
लगता है
फिर जी उठे हैं गांधी
पूरे एक वर्ष बाद
आज
कई प्रस्ताव
सभाओं में
पारित होंगे
कई योजनाएँ
चालू होंगी
गांधी पुरस्कार
वितरित किये जाएँगे
आज भर के लिए
चलेगा सफाई अभियान
भाषण सुनते
श्रोताओं के बीच
उबासियाँ लेते
कोई गोडसे को
सराहेगा
कोई कोसेगा
और कोई
आज के
भारत की स्थिति के लिए
गांधी को
दोषी ठहरायेगा।
इन्हीं सब के बीच
सर्वधर्म प्रार्थना सभा होगी
दिल्ली में
राजघाट पर
फूल चढ़ाए जाएँगे
और ऐसे होगी
गांधी जयंती की
इतिश्री।

पूरे एक साल बाद
मेहनत से
जगाए गांधी
आज से
फिर सोएँगे
निश्चिन्त
आने वाली अगली
गांधी जयंती तक।

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

गाँधी–शास्त्री: अंतरात्मा के दो स्वर

गांधी ने सिखाया—
सत्य केवल वाणी में नहीं,
आचरण में उतरना चाहिए;
अहिंसा केवल संघर्ष की पद्धति नहीं,
मनुष्य के भीतर की करुणा है।

शास्त्री ने उसी नैतिक धरातल पर
सादगी को जीवन का आभूषण,
ईमानदारी को सार्वजनिक दायित्व
और कर्तव्य को सर्वोच्च धर्म बनाया।

आज युद्ध, हिंसा, अविश्वास और
स्वार्थ से घिरे विश्व में
गांधी का सत्य और अहिंसा
अब भी राह दिखाते हैं,
पर सत्याग्रह कहीं-कहीं
सत्य के आग्रह से अधिक
स्वार्थ के दबाव में बदलता दिखाई देता है।

अब शास्त्री की सादगी
स्मारकों में सुरक्षित है,
पर सार्वजनिक जीवन में
उसकी छाया खोजनी पड़ती है।
"समय बदल गया,
साधन बदल गए,
संघर्षों के चेहरे बदल गए—
पर मनुष्य के भीतर का सत्य
आज भी वही है;
प्रश्न केवल इतना है,
हम उसके साथ खड़े हैं या नहीं।"

दिलीप आचार्य "सोमेश्वर"

गांधी जयंती

पोरबंदर की पावन धरती पर,
एक बालक ने जन्म लिया,
दो अक्टूबर अठारह सौ उनहत्तर,
भारत ने मोहन को पाया था।
करमचंद गांधी पिता बने,
पुतलीबाई थीं माता,
सत्य, धर्म और संस्कारों की
मिली उन्हें अनुपम सौगात।
नाम था मोहनदास करमचंद,
मन में सरल उजियारा था,
बाल्यकाल में सत्य की राह का
धीरे-धीरे सहारा था।
तेरह वर्ष की छोटी उम्र में
कस्तूरबा संग ब्याह हुआ,
जीवन के सुख-दुःख के पथ पर
साथ निभाने का व्रत हुआ।
विद्या पाने इंग्लैंड गए,
बैरिस्टर बनकर लौटे,
पर जीवन की असली मंजिल के
द्वार अभी थे उनसे दूर खड़े।
दक्षिण अफ्रीका पहुँचे जब वे,
न्याय की राह दिखाई दी,
ट्रेन से बाहर फेंके जाने की
घटना ने आग जलाई थी।
रंगभेद की पीड़ा देखी,
अन्याय सामने आया,
सत्याग्रह का बीज उसी धरती पर
मोहन ने तब बोया था।
सत्य को अपना शस्त्र बनाया,
अहिंसा को ढाल किया,
अन्याय के आगे झुकने से
साफ-साफ इनकार किया।
फीनिक्स आश्रम, टॉल्स्टॉय फार्म,
सेवा का संदेश दिया,
अपने जीवन के आचरण से
सत्य का अर्थ समझा दिया।
फिर भारत की धरती पर लौटे,
जन-जन की पीड़ा जानी,
गाँव-गाँव में घूमकर देखी
गरीबी और बेबसी पुरानी।
चंपारण की धरती पर जाकर
नील किसानों की सुनी पुकार,
सत्याग्रह से न्याय दिलाया,
बदला संघर्ष का आधार।
खेड़ा में किसान खड़े हुए,
अहमदाबाद में श्रमिक साथ,
गांधी ने संघर्षों को दी
सत्य-अहिंसा की नई बात।
चरखा उनके हाथ में आया,
स्वदेशी का स्वर गूँजा,
खादी केवल वस्त्र न थी,
आत्मनिर्भर भारत का सपना था।
जलियाँवाला का घाव लगा तो
देश हुआ आक्रोशित सारा,
असहयोग आंदोलन ने फिर
जगाया स्वतंत्रता का नारा।
नमक पर जब शासन का पहरा,
गांधी ने चुनौती दी,
साबरमती से दांडी तक चलकर
नमक कानून की बेड़ी तोड़ी।
वह दांडी यात्रा केवल यात्रा
नहीं, स्वतंत्रता की पुकार थी,
हर कदम में भारत की जनता
और स्वराज की हुंकार थी।
गोलमेज सम्मेलन में जाकर
भारत की आवाज उठाई,
सत्ता के गलियारों में भी
जनता की पीड़ा बतलाई।
भारत छोड़ो का मंत्र दिया—
"करो या मरो" का आह्वान,
अंग्रेजी शासन के विरुद्ध
उठ खड़ा हुआ हिंदुस्तान।
जेल गए, पर हिम्मत न टूटी,
सत्य रहा उनके संग,
आँधी आई, तूफान आया,
पर न बदला उनका रंग।
स्वतंत्रता का सूरज निकला,
पंद्रह अगस्त का दिन आया,
पर गांधी दिल्ली के उत्सव में
अपना मन न बहला पाया।
देश विभाजन की पीड़ा ने
उनका हृदय दुखाया था,
हिंदू-मुस्लिम एकता का
संदेश उन्होंने सुनाया था।
नोआखली की गलियों में जाकर
घावों पर मरहम लगाया,
उपवास और प्रार्थना से
नफरत का अंधकार मिटाया।
दिल्ली में भी शांति के खातिर
उन्होंने उपवास किया,
टूटे मन को जोड़ने का
अंतिम तक प्रयास किया।
तीस जनवरी उन्नीस सौ अड़तालीस,
संध्या का वह समय था,
प्रार्थना सभा की ओर बढ़े गांधी,
देश का महान संत था।
हे राम के उच्चार के संग
जीवन-दीप बुझ गया,
पर सत्य-अहिंसा का सूरज
विश्व-गगन में उग गया।
मोहन से महात्मा बनने की
यह अद्भुत जीवन-कथा,
सत्य रहा उनका संबल,
अहिंसा रही उनकी प्रथा।
न धन चाहा, न राजमहल,
न सत्ता का अभिमान,
जनसेवा को जीवन माना,
भारत को माना भगवान।
आज भी जब हिंसा बढ़ती है,
जब मन में घृणा समाती है,
गांधी की आवाज भीतर से
सत्य की राह दिखाती है।
चरखा कहता—श्रम को मानो,
खादी कहती—स्वदेश अपनाओ,
सत्य कहता—डरो नहीं तुम,
अहिंसा कहती—प्रेम निभाओ।
गांधी केवल नाम नहीं हैं,
एक विचार हैं, एक प्रकाश,
मानवता के कठिन समय में
बन सकते हैं जीवन की आस।
जब तक सत्य रहेगा जीवित,
जब तक प्रेम रहेगा महान,
तब तक गांधी की जीवन-गाथा
गूँजेगी बनकर हिंदुस्तान।
जन्म से मृत्यु तक जीवन उनका
एक संदेश सुनाता है—
सत्य-अहिंसा के पथ पर चलकर
मानव खुद को ऊँचा उठाता है।

आशीष कुमार रस्तोगी

पाठ पढ़ाया गाँधी ने

मानवता का पाठ पढ़ाया गाँधी ने
समता का भी पाठ पढ़ाया गाँधी ने

जीवन देखा हमनें उनका सादा था
ममता का भी पाठ पढ़ाया गाँधी ने

बरछी तीर कटार ना तो लाठी से
क्षमता का भी पाठ पढ़ाया गाँधी ने

कोमल मन हमनें देखा है सादापन
उदारता का पाठ पढ़ाया गाँधी ने

पशु प्रेम भी करते हमनें जाना है
कोमलता का पाठ पढ़ाया गाँधी ने

किशोर छिपेश्वर "सागर

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
शनिवार, 3 अक्टूबर 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

क्या सच में हम अपने लिए जीते हैं?

कितना विचित्र है कि हम जिस जीवन की एक साँस भी अकेले नहीं जुटा सकते, उसे केवल अपना मानकर जीने का दावा करते हैं!

कहते हैं, "मेरा जीवन है, मेरी इच्छाएँ हैं, मेरी सफलता है और मुझे अपने लिए जीना है।" लेकिन क्या कभी सोचा है कि इस 'मेरे' के पीछे कितने लोगों का श्रम, कितने संबंधों का स्नेह, कितनी पीढ़ियों का योगदान और प्रकृति का कितना अनमोल सहयोग छिपा है? जिस अस्तित्व को हम अपना कहते हैं, उसकी बुनियाद ही दूसरों से जुड़ी है। जन्म से लेकर जीवन की अंतिम साँस तक हम किसी न किसी रूप में परिवार, समाज और प्रकृति पर निर्भर रहते हैं।

विडंबना यह है कि हम सहयोग से बने जीवन में अकेले जीने की स्वतंत्रता तलाश रहे हैं।

निस्संदेह, अपने सपनों, इच्छाओं और मानसिक शांति के लिए जीना हमारा अधिकार है। लेकिन अपने लिए जीने की चाह में यह भूल जाना कि हमारा अस्तित्व असंख्य संबंधों और सहयोगों का परिणाम है, जीवन के अधूरे सत्य को स्वीकार करना है।

सुबह उठकर हम नल खोलते हैं, पानी मिल जाता है। चूल्हा जलता है, चाय बनती है, अन्न पकता है। यह सब इतना सहज लगता है कि हम उसके पीछे जुड़े असंख्य हाथों को भूल जाते हैं। खेत में अन्न उगाने वाला किसान, उसे बाजार तक पहुँचाने वाला व्यक्ति, घर तक सामान पहुँचाने वाला दुकानदार और व्यवस्था को सुचारु रखने वाले अनगिनत लोग हमारे जीवन का हिस्सा हैं, भले हम उन्हें जानते तक न हों।

हम अपनी सफलता को भी अक्सर केवल अपनी मेहनत का परिणाम मानते हैं। मेहनत निस्संदेह हमारी होती है, लेकिन उस सफलता की जमीन अकेले हमने नहीं बनाई। माता-पिता के संस्कार, शिक्षक का मार्गदर्शन, किसी का दिया अवसर, मित्र का विश्वास और कठिन समय में मिला सहयोग, हमारी यात्रा में कहीं न कहीं शामिल होते हैं।

एक लेखिका के रूप में जब मैं अपने साहित्यिक और प्रकाशन कार्य को देखती हूँ तो यह बात और स्पष्ट होती है। एक पुस्तक केवल लेखक की कलम से प्रकाशित नहीं होती। लेखन के साथ संपादन, संयोजन, डिजाइन, तकनीकी सहयोग और पाठकों तक पहुँचने की पूरी प्रक्रिया जुड़ी होती है। अन्तरा शब्दशक्ति के साहित्यिक कार्यों में भी अनेक रचनाकारों और सहयोगियों के साथ मिलकर काम करते हुए मैंने अनुभव किया है कि एक व्यक्ति की पहल तभी व्यापक रूप लेती है, जब वह "मैं" से "हम" बनती है।

फिर *"मैं किसी पर निर्भर नहीं हूँ" कहना कितना सच है?*

मनुष्य संकट में इस सत्य को सबसे अधिक महसूस करता है। बीमारी में चिकित्सक और दवा की जरूरत होती है, कठिन समय में किसी अपने की उपस्थिति मन को संभालती है और कई बार किसी अनजान व्यक्ति की छोटी-सी सहायता भी जीवन में बड़ा परिवर्तन ला देती है। आत्मनिर्भर होना शक्ति है, लेकिन पूर्णतः आत्मनिर्भर होना मनुष्य के लिए संभव नहीं।

हम प्रकृति पर भी उतने ही निर्भर हैं। भारतीय चिंतन ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश को पंचतत्व कहा है। आधुनिक दृष्टि से भी मनुष्य अपने पर्यावरण से अलग नहीं है। हम घर बदल सकते हैं, जीवनशैली बदल सकते हैं, तकनीक विकसित कर सकते हैं, लेकिन हवा, पानी, धरती और प्राकृतिक संसाधनों के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकते।

हमारा "मैं" भी अकेले नहीं बना। उसमें परिवार की सीख, शिक्षक की डाँट, मित्रता के अनुभव, समाज के संस्कार और समय की परिस्थितियाँ शामिल हैं। इसलिए मनुष्य को केवल स्वतंत्रता ही नहीं, संबंध और आत्मीयता भी चाहिए।

आज मोबाइल में सैकड़ों संपर्क हो सकते हैं, लेकिन यह जरूरी नहीं कि उनमें कोई ऐसा भी हो जिसके सामने हम बिना संकोच अपने मन की बात कह सकें। संपर्कों की संख्या और संबंधों की गहराई अलग-अलग बातें हैं। प्रसन्नता को बाँटने वाला और पीड़ा को समझने वाला कोई अपना हो, यह मनुष्य की सहज आवश्यकता है इसलिए प्रश्न यह नहीं कि "मैं अपने लिए जीऊँ या दूसरों के लिए?"

प्रश्न यह है कि "क्या मैं अपने लिए भी जी रहा हूँ और उन लोगों तथा उस प्रकृति के प्रति भी सजग हूँ, जिनके कारण मेरा जीवन संभव है?"

सच्ची स्वतंत्रता शायद वहीं है जहाँ हम दूसरों की अपेक्षाओं में स्वयं को खोते नहीं और अपनी स्वतंत्रता में अपनों को भूलते नहीं। अपने सपनों को समय देना स्वार्थ नहीं और दूसरों की जरूरत होना कमजोरी नहीं।

आइए, अपने लिए भी जीएँ, लेकिन अकेले नहीं।
अपने सपनों को समय दें, अपनों को अपनापन दें और प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाएँ।
जिन अनगिनत हाथों ने हमारे जीवन को सँभाला है, उनके प्रति कृतज्ञ रहें और किसी दूसरे के जीवन में सहारा, विश्वास और उम्मीद बनने का प्रयास करें।
अपने "मैं" को बचाइए, लेकिन अपने "हम" को मत खोइए।

डॉ. प्रीति समकित सुराना

गांधी जी के तीन बंदर

मेरे सपने में आए गांधी जी के तीन बंदर,
मुझसे कहते जाओ तुम घर के अंदर,

यहां तुम रह नहीं पाओगे
बेवजह तुम मारे जाओगे

यहां कोई नहीं सुनता पुकार
यहां होता पल-पल नारी पर अत्याचार

यहां नहीं इंसानियत जागी
यहां हर गली नुक्कड़ में गुंडो की फौज खड़ी
जो कर रही आपका इंतजार

है हिम्मत तो लड़ के दिखाओ
वरना चुपचाप घर में बंद हो जाओ
मूकबाधिर तुम भी बन जाओ

आज गांधी जी रोते हैं
कहते काश में लाठी की जगह शस्त्र उठाता
अपने देश की बेटियों को चलाना सीखाता

काश मैं अहिंसा के साथ उन्हें निर्भीक और बलवान बनाता
निकल पर पर्दे की आड़ से उन्हें अपनी लड़ाई खुद लड़ना सीखाता

पर इस कलयुग में मेरे तीनों बंदर हार गए
कभी मैंने सिखाया
बुरा मत देखो,
बुरा मत बोलो,
बुरा मत सुनो।
क्योंकि इस कलयुग में दुर्योधन और दुशासन जैसे दुष्ट आ गए
जो पल पल आतंक मचाते
अपने आप को बाहुबली कह जाते
ख्वाब जो मैंने देखा मेरे प्यारे हिंदुस्तान का
टूट कर बिखर गया
क्योंकि मेरे प्यारे हिंदुस्तान का सिस्टम बिगड़ गया है

निक्की निषाद.

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वाराणसी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
रविवार, 4 अक्टूबर 2026

सृजन समीक्षा

एक पाठकीय समीक्षा

'हैं न'

मुकेश कुमार सिन्हा सर जी का कविता-संग्रह '**हैं न**' मुझे अगस्त माह में ही प्राप्त हो गया था, लेकिन इसे पूरा पढ़कर समाप्त मैं **28 सितम्बर 2026** को कर पाई। निजी जीवन की व्यस्तताओं के कारण इसमें विलम्ब हुआ। इसके लिए मुकेश सर, आपसे क्षमाप्रार्थी हूँ, लेकिन एक पाठक के रूप में लेखक से कही गई अपनी बात मैंने निभाई है।

'**हैं न**' एक ऐसा काव्य-संग्रह है, जहाँ भावनाओं की प्रचुरता के साथ उन संवेदनाओं का विश्वास भी दिखाई देता है, जहाँ कुछ भावनाएँ सबके लिए एक-सी होती हैं—जैसे प्रेम। बस, उन्हें महसूस करने का भाव और उन्हें देखने-समझने का दृष्टिकोण अलग होता है। यही गहन भाव इस संग्रह में प्रेम की विभिन्न अनुभूतियों के रूप में दिखाई देते हैं। '**हैं ना**' में प्रेम को भावनात्मक दृष्टि के साथ-साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी देखा और अभिव्यक्त किया गया है।

प्रेम को सबसे पहले भौतिक विज्ञान की दृष्टि से '**प्रेम का अपवर्तनांक**' में पढ़ने को मिला। यह मेरे लिए एक बिल्कुल नया एहसास था। प्रेम के भाव को इस वैज्ञानिक अवधारणा के साथ पढ़ना बेहद सुखद और रोचक लगा।

जैसे-जैसे मैं आगे पढ़ती गई, प्रेम के नए-नए एहसासों से मिलती गई। '**सुनो ना**', '**अजीब लड़की**', '**Still I Love Her**' जैसी कविताएँ पढ़कर वास्तव में यह महसूस हुआ कि प्रेम को समझने और सुनने के लिए प्रेम में होना शायद एक महत्वपूर्ण भाव है।

मुकेश सर ने अपनी हर कविता में प्रेम को एक नए दृष्टिकोण से अपनी कलम में संजोया है।

'**प्रेम की भूलभुलैया**' मुझे सबसे अधिक अपने करीब लगी। शायद इसलिए कि लखनऊ की भूलभुलैया में वापस प्रेम की मनभावन कविताओं के रास्तों पर घूमते-फिरते, उन गलियों से गुजरते हुए प्रेम को पाने की अनुभूति को जी लेना अपने आप में एक अलग एहसास था।

'**सुनो लाल फ्रॉक वाली लड़की**' और '**यादगार बोसा**' जैसी कविताएँ उन ख्वाबों की तरह हैं, जो मिलकर फिर वापस चले जाते हैं और कवि अपनी कलम से उन ख्वाबों को कविता में उकेर देता है।
भावनाओं के उमड़ते बादलों की तरह इन प्रेम-कविताओं में हर एहसास मौजूद है—दर्द, अश्रु, प्रेम, ईमानदारी, इंतज़ार, ख्वाब, चाहत और मन का समंदर बन जाना। एक से बढ़कर एक नए आधार पर बुनी गई प्रेम-कविताओं का सुंदर सृजन मुकेश सर ने किया है।

'**हैं न**' में मुझे क्षणिकाएँ भी पढ़ने को मिलीं। इन क्षणिकाओं में एक अद्भुत दृष्टिकोण देखने को मिला। गणित से एक बार फिर सामना हुआ, लेकिन इस बार गणित के सूत्रों से अधिक उनके भीतर छिपे भावों ने ध्यान खींचा। रिश्तों के ताने-बाने और प्रेम को गणितीय आकृतियों और अवधारणाओं के माध्यम से जिस तरह अभिव्यक्त किया गया है, वह अपने आप में अनूठा है।

क्षणिकाओं के कुछ शीर्षक ही इसकी कल्पनाशीलता का अंदाज़ा दे देते हैं—**'रेखा', 'त्रिकोण', 'वर्ग', 'वृत्त', 'षट्भुज', 'अर्धवृत्त', 'समान्तर रेखाएँ', 'पाई', 'वक्र रेखाएँ' और अंत में 'शून्य'।**

इन क्षणिकाओं को पढ़कर मैंने कुछ नया सीखा और प्रेम को एक नए दृष्टिकोण से समझने की कोशिश की। गणितीय अवधारणाओं में रिश्तों और भावनाओं को तलाशना इस संग्रह की एक विशेष खूबसूरती लगी।

मुकेश सर एक शानदार लेखक हैं और मुझे खुशी है कि मैं '**हैं न**' की पाठक बनी।
आपका बहुत आभार, मुकेश सर। आपने मुझे '**हैं ना**' पढ़ने का अवसर दिया और वह समय भी दिया, जिसमें मैं अपने मन के भावों को शब्दों में ढालकर यह समीक्षा लिख पाई।
एक बार फिर से क्षमाप्रार्थी हूँ कि समीक्षा लिखने में विलम्ब हुआ, लेकिन एक बात निश्चित रूप से कह सकती हूँ—मैंने आपको पढ़ा और पढ़कर अच्छा लगा...

मुकेश सर आपको ढेर सारी शुभकामनाएं

माँ सरस्वती की कृपा सदा आप पर बनी रहे.....

उम्मीद है, इस पाठक की समीक्षा में छिपे भावों को आप सभी समझ पाएँगे।
हैं न....!!

समीक्षक,
नंदिता तनुजा, लखनऊ (उ.प्र.)
पुस्तक :- है न! (कविता संग्रह)
लेखक :- मुकेश कुमार सिन्हा, दिल्ली

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
सोमवार, 5 अक्टूबर 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

तेरी याद में

काटी हैं कितनी रातें, न जाने तेरी यादों में,
अब सब बेगाना लगता है, तेरे जाने के बाद में।

तू दीवानी शायरी की, मैं दीवाना था तेरा,
हर घड़ी कहती थी तू, सुना दो ना एक मिसरा।

मेड़ों पे चलना, काँटों का पाँवों में चुभना,
तेरा दर्द खलना, जो पहले तूने था सहना।

मकां में आना-जाना, कोई रोक-टोक नहीं,
अलमस्त तेरा जीवन, मुझको खूब भाती रही।

मेलों में तू झगड़ती, चूड़ियों पर अड़ जाती,
मैं कहता, तू मेरी है, तू अपनी ही कहती जाती।

हम दोनों हमसफ़र थे, जुदा न होते पलभर,
फ़लक से गिरी बिजली, साथ छूटा उस पहर।

तेरा अक़्द कहीं और हुआ, मेरा इश्क़ खामोश हुआ,
ना तेरी चली, ना मेरी, मोहब्बत कुर्बान हुई।

आँखों में नमी की धारा, रोके न रुक पाई थी,
सामने तू बैठ डोली में, रोकर सदा लगाई थी।

पर अब कुछ भी दस्त-ए-क़ुदरत न था,
वक़्त का खेल यह, बड़ा ही दुश्वार है रे!

मिलें खुशियाँ बेशुमार हों तेरे नसीब में,
मैं अकेला ही, ज़िंदगी गुज़ार लूँगा रे!

जहाँ भी रहे तू, सलामत ही रहना,
ख़ुदा, ये दरख़्वास्त मेरी, तू मान लेना।

'उदय' उस तरफ अब, नज़रें टिकाने लगा है,
तू है मेरी शायरी में, यूँ ही दिल लगाने लगा है।

उद्देश्य तिवारी 'उदय'

संघर्ष और सफलता

संघर्षों से भरा रास्ता,
जहाँ काँटे भी है राहों में,
मन कहता है थम जा,
न चल पाएगा तू इस राह में,
मगर दूसरी तरफ़ दिमाग़ कहता है,
नहीं चलो आगे बढ़ो,
सपने करने हैं तुम्हें पूरे,
चाहे हो कितनी भी काँटों से भरी राह,
उथल पुथल मची है भीतर,
तभी भीतर से आवाज़ आई,
आँखें बंद करो और करो चुनाव,
भविष्य तुम्हारा है न घबराओ,
अंतस् से उजाला आया,
मन की आँखों से देखा,
आसमान में एक सुनहरा द्वार खुला पाया,
मानों वो खुला हो मेरे लिए,
काँटों भरी राह के बीच,
उम्मीद की किरण जाग उठी,
अंतर्द्वंद्व जो चल रहा था भीतर वो शांत हुआ,
तब राह भी साफ़ नजर आने लगी,
मन ख़ुशी से झूम उठा,
बस कदम बढ़ाने की थी देरी,
आसमां हाथ पसारे खड़ा था,
बस थोड़ी सी थी दूरी,
एक कदम बढ़ाने को,
कर लिया जब प्रण हमने,
आसमान को छूने को,
फिर हर राह के काँटे भी,
फूल लगने लगे,
प्रभुल्लित मन से हम भी आगे बढ़ने लगे,
पाने को अपनी मंजिल,
करने को सपने पूरे,
हम सुनहरी आभा के पीछे निकलें पड़े!

अदिति रूसिया

मेरे सपनों का आसमान

मेरे जीवन का सुनहरा फलक है
मेरे सपनों का नीला आसमान!!
बिखरे हैं जहां मन की विविधताओं के रंग
प्यार ,स्नेह,गरिमा, हर्ष और विषाद,
जीवन के रंगों में घुलता जहान,
मेरे सपनों का आसमान!!
हौसलों की सीढियों से तुम तक पहुंचना
और छू लेना अपनी पहचान।
तुमसे मिलने का अनुरागी लाल रंग
और बिछुडने का श्वेत-श्याम,
फूलों की मधुरिमा लिए
बगिया का मुस्काता मौसम,
बूंद बूंद रस बरसाता ,
खुशबुओं का करता रसपान
मेरे सपनों का आसमान!!
पतझड़ की सूखी, रंगहीन उदासी,
पलकों पर सोए आंसुओं की नमी भी
बह रही है नदी सी,
इस नीले समंदर में
और उमड़ता है भावनाओं का तूफान
मेरे सपनों का आसमान!!

पद्मा मिश्रा

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
मंगलवार, 6 अक्टूबर 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

आत्म चिंतन

आत्मचिंतन व्यक्ति के अपने विचारों, भावनाओं, अपने किये हुए कर्मों, कार्यों, अपने द्वारा किए गए व्यवहारों, अनुभव की गहराइयों की समीक्षा अर्थात मंथन कर जांच कर एक आवश्यक मानसिक और आध्यात्मिक प्रक्रिया है |

आत्मचिंतन का अर्थ और स्वरूप:-

आत्मचिंतन का अर्थ है, खुद से सवाल पूछंना कि मैं ऐसा क्यों महसूस करता हूं | बाहरी दुनिया की दौड़ भाग से हटकर अपने लिए कुछ समय निकालकर अपने भीतर झांककर देखना और यह समझना कि हम किसी विशेष तरीके से क्या सोचते हैं या व्यवहार करते हैं | इसी प्रक्रिया को आत्म निरीक्षण या आत्म विश्लेषण कहा जाता है |

आध्यात्मिक दृष्टि कोण :----

आध्यात्मिक रूप से चित्त को बिल्कुल शांत करके अपनी आत्मा में स्थिर होना ही सच्चा आत्म चिंतन है | यह अपने अहंकार और सभी प्रपंच से मुक्त होकर अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने का उत्तम मार्ग है |

आत्मचिंतन के लाभ और महत्व :--

मानसिक स्वास्थ्य:-

आत्मचिंतन आत्म जागरूकता को बढ़ाता है, इससे मनुष्य का तनाव कम होता है और मानसिक शांति मिलती है | अपने विचारों और अपने व्यवहारों का विश्लेषण करने से , मंथन करने से खुद की गहराइयों को समझने का अवसर मिलता है |

व्यक्ति गत विश्राम :--

आत्मचिंतन से अपनी स्वयं की कमियों और खूबियों का निष्पक्ष रूप से मूल्यांकन करके व्यक्ति अपने व्यवहार और भविष्य को सुधार सकता है | अपनी की गई गलतियों से सीखकर भविष्य के लिए बेहतर योजना बनाने में सहायता मिलती है |

संवादों में सुधार :--

आत्मचिंतन अर्थात अत्म निरीक्षण से हमें दूसरे के साथ अपने रिश्ते के तरीके और संवाद की कमियों को समझने में मदद मिलती है |

आत्म समीक्षा के मुख्य चरण :---

मौन और स्थिरता :--मन की हलचल को शांत करने के लिए एकांत और मौन का सहारा लें | अर्थात एकांत स्थान पर बैठकर मौन रहकर मन को स्थिर रखें , जिससे मन में बहुत सकून मिलता है |

मूल्यांकन :----

अपने पूरे दिन का या जीवन का निर्णयों बिना किसी पक्षपात के विश्लेषण करें, जिससे हमें यह पता चले कि हमारे जीवन में लिए गए निर्णय का परिणाम क्या है , सही है या गलत है |

सुधार :----

हमारे आत्म चिंतन के दौरान जो कमियां समझ में आये उन्हें अगले जीवन में व्यवहार में सुधारने का संकल्प लें |

आत्मचिंतन के कुछ आसान और प्रभावी तरीके :-----

शांत और एकांत वातावरण चुनें:---दिन में कम कम दस से पंद्रह मिनट का मौन रहकर समय बिताएं | अपनी आंखों को बंद करके बैठे और बाहरी दुनिया से ध्यान हटाकर भीतर की ओर अपने आप को और अपने मन को केन्द्रित करें |

खुद से खुले प्रश्न पूछे :--आप अपने आप खुद से पूछें कि आज आपका दिन कैसा रहा, क्या आपने कोई ऐसा काम किया है, जिससे किसी का दिल दुखा हो या आपको अपनी किसी गलती पर सुधार की आवश्यकता है |

कृतज्ञता व्यक्त करें:---- उन अच्छी चीजों पर और उन लोगों के बारे में सोचे जिनके लिए आप जीवन में आभारी हैं | इससे मन में सकारात्मकता आती है और मानसिक शांति मिलती है |

डायरिया लिखें :---अपने विचारों, कमियों,और सीखे गये पाठों को एक डायरी में लिखें | लिखने से मन का बोझ हल्का होगा और भविष्य में स्पष्टता आयेंगी |

तनाव और चिंता में कमी:---मन की उलझनों को सुलझाने में मानसिक शांति मिलती है और चिंता कम होती है |

बेहतर निर्णय की क्षमता :----आत्म चिन्तन से सोच समझकर निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है और जीवन में सफलता मिलती है |

भावनात्मक नियंत्रण :---आत्म चिंतन से क्रोध और नाकारात्मक भावनाओं को नियंत्रित करने में मदद मिलती है |

रिश्तों इस सुधार :---- खुद की भावनाओं को समझने के बाद , अच्छे बुरे का ज्ञान होने के बाद, दूसरे के प्रति सहानुभूति और धैर्य बढ़ता है, जिससे रिश्ते मजबूत होते हैं |

आत्म निरीक्षण और महत्व :--

स्वयं को समझना:--- इसके द्वारा व्यक्ति अपनी अच्छाईयां, बुराईयां और कमजोरियों को स्पष्ट रूप से देखता है जिससे वह अपने जीवन में सुधार का मार्ग अपनाता है |

मानसिक स्थिति का अवलोकन :--- व्यक्ति अपनी त्रुटियों को पहचानकर उन्हें सुधारने और बेहतर इंसान बनने में मदद मिलती है |

नकारात्मकता पर नियंत्रण :-- इससे क्रोध, अहंकार, ईर्ष्या, जैसी प्रवृत्तियों पर काबू पाया जा सकता है |

आत्मचिंतन के मुख्य कारण:----

माता पिता का व्यवहार, प्यार और भरण पोषण का तरीका बच्चों के आत्म विकास की नींव को रखता है | सामाजिक रीति रिवाजों, परम्पराओं और सांस्कृतिक अपेक्षाएं यह तय करतीं हैं कि व्यक्ति खुद को और समाज को कैसे देखें | जीवन में मिलने वाली सफलताओ,असफलताओं और पिछली घटनाओं और आत्म विश्वास आत्म धारणा को सीधे प्रभावित करती है | दोस्तों और साथियों के व्यवहार उनकी संगती, आपसी सहानुभूति आदि आत्म संरचना को सकारात्मक भावनात्मक रूप से आकार देती है | व्यक्ति का स्वास्थ्य, मानसिक स्थिति और आत्म सम्मान को गहराई से प्रभावित करती है |

इस प्रकार आत्म चिंतन व्यक्ति की भावनाओं, विचारों, जीवन के अनुभव, व्यवहारों की गहराई से समीक्षा करने की एक आवश्यक मानसिक और आध्यात्मिक प्रक्रिया है |

शिवशंकर दुबे (गंगेले)
वारासिवनी
जिला बालाघाट
मध्यप्रदेश

देना है संदेश

देना है संदेश मुझे यह हर मानव को,
करो नहीं बर्बाद इस तरह वसुंधरा को।
प्रभु ने तुमको हरा भरा संसार दिया था,
क्षुधा शान्त करने को पूर्ण आहार दिया था।

रहे प्रसन्न सदा मानव इसलिए प्रभु ने,
रंग-बिरंगे फूलों से संसार सजाया।
फल वाले वृक्षों से धरती को महकाया।
भूख मिटाने को भोजन पीने को पानी,
रहने को आवास से वंचित रहे न प्राणी।

तरह-तरह के खनिजों से समृद्ध है धरा,
फिर भी मानव आज नहीं संतुष्ट दिख रहा।
प्रकृति के इन उपकारों को भूल गया है।
और अधिक की चाहत में वह दौड़ रहा है ।
और अधिक की चाहत ने विध्वंस किया है।
हरी भरी धरती का सत्यानाश किया है।

खनिजों का दोहन करके धन खूब कमाया।
इतना धन पाकर भी वह खुश न हो पाया।
इस धनलिप्सा के कारण जग में संग्राम मचा है
लाखों काल के गाल समा गए,समय बड़ा
विकराल हुआ है।
देना है संदेश मूर्खता करनी छोड़ो
मानवता के हित के लिए व्यर्थ के युद्ध न छेड़ो।
जियो और जीने दो सबको,यही सोच हो
मिल जुलकर सब रहें,कहीं न कोई युद्ध हो।

राधा गोयल

मेरा सच.....

जब जब गिराओगे मुझे
साहस से उठ जाऊंगी मैं।
इस दुनिया में परिवर्तन लाऊंगी मैं।

पल-पल गिरते
अपने सम्मान को
बचाने आऊंगी मैं।

"मैं" कोई धुंधला प्रकाश नही
ज्योति पुंज हूँ ज्ञान का।
ज्योत की लौ सा सबको
दीप्तिमान कर जाऊंगी मैं।

अनुभव करने दो मुझे "शब्द"
और रचने दो वाक्य यहाँ।
बनाने दो नए समीकरण
जीवन की राह में,
नए कीर्तिमान तब बनाऊंगी मैं।

अखंड ज्योति की तरह
प्रज्ज्वलित हो जाऊंगी मैं।
सुगन्ध से महकती
खुशियां दे जाऊंगी मैं।

बनूंगी सहारा तुम्हारा भी
कागज़ों पर इतिहास लिख जाऊँगी मै।

करने रोशनी दुनिया को
बार बार आऊँगी मैं।
जब जब गिराओगे मुझे
साहस से उठ जाऊंगी मैं।

विशाखा सिंघल

आस-पास

नहीं उतरते भगवान धरती पर यूँ ही,
जब दुआओं में हम पैग़ाम भेजते हैं।
भेजते हैं वो भी अपने दूतों को हम तक,
जो आम भेष में आस-पास दिखते हैं।
माँ-बाप में, कभी चिकित्सक में,
कभी किसी अनजान में मिलते हैं।
कभी कैप्टन स्मिथ जैसे जाँबाज़,
बनकर फ़रिश्ते सामने आते हैं।
कभी ममता, कभी सेवा बनकर,
कभी साहस का रूप धरते हैं।
किसी अनजान की जान बचाकर,
ईश्वर होने का एहसास कराते हैं।
ईश्वर को खोजो मत दूर कहीं,
वो आस-पास ही नज़र आते हैं।
जब कोई बनकर उसका दूत,
दूसरों के जीवन में उजास भर जाते हैं।

सोनम लड़ीवाला

बड़े आदमी की याद

बड़े आदमी की यादें
स्मारकों में शेष रहती है
उनके नाम पर बनाये
मंदिरों धर्मशालाओं में शेष रहती हैं
उनके नाम पर घोषित
पदक पुरस्कारों में शेष रहती है

कमरें में सुरक्षित रखी उनकी वस्तुओं
लाठी टोपी पगड़ी ऐनक
जस की तस रखी
सोने की ज़री वाली
उनकी जूतियों में शेष रहती हैं ।

शरद कोकास

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वाराणसी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
गुरुवार, 8 अक्टूबर 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

दिल से नमन उनको मेरा

सरहद पर जो अड़ा हुआ है, मातृभूमि की ढाल बने।
दुश्मन के हर वार के आगे,खड़ा है वज्र विशाल बने।
सीने पर गोली खाकर जो,रण में अटल मिसाल बने।
भारत माँ की आन बचाने, मृत्युंजय प्रतिपाल बने।
जिनके विश्वासों के दम पर,रोज नया निकले सवेरा।
दिल से नमन उनको मेरा,दिल से नमन उनको मेरा।।

जो तूफानों से आँख मिलाकर, आगे बढ़ता जाता है।
चट्टानों को चीर कर अपना, रास्ता स्वयं बनाता है।
सीमा की पावन धरती पर, विजय-ध्वज फहराता है।
भारत माँ के जयकारों को, नभ में जो गुँजवाता है।
जिनके बलिदानों के दम पे, नहीं कहीं भी है अंधेरा।
दिल से नमन उनको मेरा, दिल से नमन उनको मेरा।।

माँ की आँखों का वह तारा, सरहद पर जब जाता है।
घर-आँगन की याद भुलाके,कर्तव्य सभी निभाता है।
अपनों की हर आस छोड़के,देश की आस जगाता है।
भारत माँ के चरणों में वह,अपना सर्वस्व चढ़ाता है।
जिनकी त्याग-तपस्या से जो,बना सुरक्षा का रहे घेरा।
दिल से नमन उनको मेरा, दिल से नमन उनको मेरा।।

रण में जब ललकार उठे तो, सिंह नाद बन जाता है।
दुश्मन की चालों के आगे, काल समान छा जाता है।
बारूदों की गंध में भी वह, ध्वजा ऊँचा लहराता है।
भारत माँ की जय बोलकर, रण में प्रलय मचाता है।
जिनके शौर्य से दुश्मन का, टूटा है अभिमान भतेरा।
दिल से नमन उनको मेरा, दिल से नमन उनको मेरा।।

नफे सिंह योगी

जरूरत और चाहत में अंतर

जरूरत और चाहत में बहुत बड़ा तो नहीं पर हम अंतर जरूर है। जरूरतें तो पूरी हो जाती हैं पर चाहत अक्सर अधूरी रह जाती है क्योंकि, चाहत के पहले हमेशा ज़रूरत पहले नज़र आती है। हम अक्सर अपनी जरूरतों को पूरा करने को प्राथमिकता देते हैं और देना भी चाहिए क्योंकि अगर हम दैनिक जीवन की जरूरतों को पूरा नहीं करेंगे तो कहीं न कहीं हम अपने साथ साथ परिवार का भी ख्याल नहीं रख पाएंगे।

हमारा सर्वप्रथम कर्तव्य होता है कि हम अपने परिवार की जरूरतों को चाहे जैसे भी हो पूरा करें और उन्हीं की जरूरतों को करते करते हम अपनी चाहतों और ख्वाहिशों को भूल जाते हैं। हम बहुत सोचते हैं कि हमें ये भी करना है वो भी करना है पर कभी बच्चे कभी पति या फिर कोई और जिसकी जरूरत हमें लगता है हमारी चाहत से शायद ज़्यादा जरूरी है उसे पूरा करना है तो बस हम अपना मन मारकर रह जाते हैं।
हमारी चाहत अधूरी रह जाती है।

चाहत कभी किसी की कम नहीं होती क्योंकि उसका कोई अंत नहीं है। आज ये चाहिए कल वो चाहिए इसका कोई अंत नहीं है। हम समाज में रहते हैं सामाजिक प्राणी है कभी किसी को देखकर कभी बाजार में नया सामान देखकर चाहत उत्पन्न हो जाती है अरे यार उसके पास फलानी चीज़ है उसके यहाँ वो सामान देखा कितना अच्छा है न अब मैं भी ले लूंगी ये सोच लिया पर हमने देखा कि शायद मेरे ऐसा करने से घर का बजट बिगड़ जाएगा नहीं इसे नहीं लेते तो क्या हुआ कि यहाँ फिर हमने जरूरत को प्राथमिकता दी अपनी चाहत को पीछे रखा। कई बार ऐसा होता कि हमें सच में किसी चीज़ की चाहत के साथ साथ ज़रूरत भी बहुत होती है पर हम उसे किन्हीं मजबूरियों के कारण टालते जाते हैं तब इस स्थिति में हमें अपनी चाहत को भी पूरा करना ज़रूरी होता है चाहत बुरी नहीं होती पर हर चाहत अच्छी भी नहीं होती, जो दूसरों को देख कर मतलब देखा सीखी वाली।

जरूरतें पूरा करना हमारा फर्ज है तो चाहत को कभी कभी पूरा कर लीना चाहिए। खासकर वो चाहत जो हमारी जरूरत भी हो। आजकल के आधुनिक समय में हर दूसरे दी। बाजार में नई नई चीजे निकलती रहती हैं हर किसी चीज को पाना चाहत नहीं है वो एक दूसरे से जोड़ लगाने वाली बात हो जाती है। *हमें किसी से आगे नहीं निकलना है अपनी जितनी चादर उतने ही पैर पसारना चाहिए। किसी की बराबरी करते रहेंगे तो हम अपनी जरूरतों को पूरा नहीं कर कर पाएंगे बस दिखावे की जिंदगी जी पाएँगे जहाँ ज़रूरतें रह जाएँगी और चाहतें कर्ज में डूबों जाएँगी।*

*आप ऐसी चीजों में निवेश करें जहाँ आपको फ़ायदा भी हो और ज़रूरतों को ताक पर रखकर चाहतें न पूरी करना पड़े। सोच बड़ी रखें, अपनी ज़रूरतों को पहले ध्यान में रखें फिर अपनी चाहतों को पूरा करने का प्रयास करें क्योंकि चाहतें कभी कम नहीं होंगी पर जरूरतें हमेशा एक समान बनी ही रहेंगी। चाहतों के आगे हमेशा जरूरतों का पलड़ा भारी ही रहेगा।

अदिति रूसिया

तुम गए कहाँ हो?

डॉ. अमृता शुक्ला

तुम गए कहाँ हो?
तुम तो अब भी बसते हो मन में।
जीवन के हर एक स्पंदन में।
कलियों की कोमल छुअन में।
टीसे उन कांटों की चुभन में।
दिन की उजली रोशनी में।
भीगी रात की खामोशी में।
पुतली बन बैठे इन आंखों में।
फूलों, पत्तियों, खुशबु, शाखों में।
पेड़ो की सरसराहट में।
कदमों की आहट में।
ओ रूह के वाशिंदे मेरे,
जीवन के चमकते सितारे।
तुम्ही हो प्रारब्ध तुम्हीं किनारे।

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
शुक्रवार, 9 अक्टूबर 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

सफ़र और मंज़िल

जब समझ आ जाए,
बस राह से गुज़र जाए,
छोड़ दे उन बातों को,
अपने साथ निकल जाए...

कोई शिकायत ही क्यों,
जब सच नज़र में आए,
जिधर अँधेरा दिखे,
उसी तरफ़ बढ़ भी जाए...

जब हौसला भी रहे साथ,
ईश्वर के हाथ मिल जाएँ,
मुस्कुराकर गुज़र जाना,
वो राह फिर न मिल पाए...

झूठ से बेहतर सच है,
सच है, वो बस सच ही है...
झूठ से कहना भी क्या,
सच है तो आगे बढ़ जाए...

देर-सबेर सही, राह मिले,
ईष्ट की अपनी नज़र भाए,
मुस्कुराकर मन मौन हो,
प्रेम के नाम रम जाए...

कि सफ़र की दूरी तय कर देती है
मंज़िलों के मायने...
बस चलते जाएँ...!!

नंदिता तनूजा

गीता का उपदेश

कर्म हेतु जीवन अर्पण
धरा को गाने दो,
सुख, सौहार्द्र, शांति का परचम
हर घर में लहराने दो।

गीता का उपदेश पवन के
पंखों पर लहराया है,
तभी तिरंगा स्वयं कृष्ण ने
हाथों में आज उठाया है।

नीति-कुनीति न होने पाए,
जन-मन गौरव हो मन में।
आजादी की रक्षा का
संकल्प जगे हर जन-मन में।

चलो कृष्ण, अब युद्ध समय का
संकट बनकर छाया है,
तभी तिरंगा स्वयं कृष्ण ने
हाथों में आज उठाया है।

भारत की इस पुण्यभूमि पर
यह हरीतिमा बनी रहे,
हर मन हो सत्कर्म निरत,
अधरों की स्मिति खिली रहे।

तप्त हृदय निर्मल हो,
जग में वंशी का रव छाया है,
तभी तिरंगा स्वयं कृष्ण ने
हाथों में आज उठाया है।

पद्मा मिश्रा

शिशिर-शयन और निष्पाप मौन

हेमंत की नीरव निशा में, विटप की छाँव तले,
रजनी का शुभ्र चंद्रकौमुदी, तृण-शय्या पर ढले।
पीत पर्ण बन गए आवरण, शीत पवन की तान,
धरा की गोदी में सोई है, विस्मृत सुध-बुध जान।
अरुण कपोलों पर अंकित है, निष्कपट इक संसार,
जहाँ न कोई विरह-वेदना, न जग का कारागार।
रिक्त पदों में धूलि-कण हैं, कर वक्षस्थल पर लीन,
अलकों में उलझा स्वप्न-जाल, चपलता सारी क्षीण।
दिशा-दिशा निस्तब्ध खड़ी है, मौन हुआ आकाश,
जैसे इस सुप्त कुसुम पर, बरस रहा हो सहास।
भोर का ताप न छू पाए यह, बाल-सुलभ विश्राम,
तृण-दल ही प्रासाद बने हैं, निद्रा ही वरदान।
न कोई छत, न कोई बंधन, न कल की कोई चाह,
प्रकृति स्वयं माँ बन सहलाती, मरुत भरे हर आह।

नीलचित्रा व्यास
(चित्रलेखा व्यास)

थोड़ा है थोड़े की जरूरत है

दो कप चाय की प्याली हो
थोड़ी सी दरवाजे पर हरियाली हो
सुकून भरी हवा मतवाली हो
दुनियां से ना बे ऐतबारी हो
घर छोटा हो खुशियों से भरा हो
कपड़े कम हो पर पर साथ हो अपनों का
भोतिक सुख कम भी चलेंगे
घर के दरवाजे पर कार चाहे पुरानी हो
सफ़र का मजा हमसफर के साथ आता है
जब वो कोई गीत गुनगुनाता है
ख्वाहिशों का क्या ये पहाड़ जैसी होती है
हमारी हसरतें कभी पूरी नहीं होती
छोटी सी जिंदगी है
थोड़ा है थोड़े की जरूरत है
जिंदगी यारों बहुत खूबसूरत है

अर्विना गहलोत

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वाराणसी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
शनिवार, 10 अक्टूबर 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

आज की नारी:

संघर्ष से आत्मनिर्भरता तक

आज की नारी केवल घर की जिम्मेदारियाँ निभाने वाली महिला नहीं, बल्कि समाज और देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली शक्ति है। वह परिवार संभालने के साथ-साथ शिक्षा, व्यवसाय, कला, साहित्य और अनेक क्षेत्रों में अपनी पहचान बना रही है।

लेकिन आज भी बहुत-सी महिलाओं के सामने आर्थिक निर्भरता, शिक्षा की कमी और सामाजिक रूढ़ियों जैसी चुनौतियाँ हैं। आत्मनिर्भरता केवल कमाई करने का नाम नहीं, बल्कि अपने निर्णय स्वयं लेने और अपने आत्मविश्वास को पहचानने का नाम भी है।

जरूरत है कि बेटियों को केवल सपने देखने की आजादी ही न मिले, बल्कि उन सपनों को पूरा करने का अवसर भी मिले। क्योंकि जब एक महिला आगे बढ़ती है, तो उसके साथ पूरा परिवार और समाज आगे बढ़ता है।

नारी को अवसर दीजिए, वह अपनी पहचान स्वयं बना लेगी।

ख़ुशी झा

विडंबना

आँखें खुलीं तो श्रीमती जी चाय की प्याली के साथ अखबार लेकर खड़ी थीं और बड़े प्यार से बोलीं, "**आँखें खुल गईं**?"

मैं चाय की प्याली हाथ में लेते हुए बालकनी में आकर प्रकृति का सुंदर नज़ारा निहारने लगा। जैसे ही कुर्सी पर बैठकर अखबार पर नज़र दौड़ाई तो रिक्रूटमेंट वाला कॉलम देखकर मुझे याद आया कि मुझे भी तो एक इंटरव्यू देने अमीनाबाद जाना है।

दरअसल, इतनी जगह इंटरव्यू दे चुका हूँ कि कहीं न कहीं कोई न कोई चूक हो ही जाती है, जिससे अभी तक नौकरी से वंचित हूँ। यद्यपि मैं पोस्ट ग्रेजुएट हूँ, किंतु जितनी पोस्ट निकलती हैं, उसकी तादाद से चौगुने लोग इंटरव्यू देने पहुँचते हैं और ज्यादातर उन्हीं लोगों की नियुक्ति होती है, जिनकी जान-पहचान होती है।

आज तो मुझे आर.के.बी.के. प्राइवेट लिमिटेड में सुपरवाइजर के लिए इंटरव्यू देने जाना था।

मैं झट से नहा-धोकर तैयार हो गया, क्योंकि पहले ही देर हो रही थी और मुझे समय से पहुँचना था। मैं ऑटो लेकर मंज़िल की ओर चल पड़ा।

अभी मुश्किल से कुछ दूर गया ही था कि मैंने देखा, सड़क पर काफी भीड़ जमा है, जिससे आवागमन ठप हो गया है।मैंने ऑटो वाले से पूछा, "भाई, यहाँ भीड़ क्यों लगी है?" ऑटो वाले ने कहा, "चलकर देखना पड़ेगा, साहब।"

मैं भीड़ को चीरते हुए जब वहाँ पहुँचा तो देखकर दंग रह गया। एक बूढ़े व्यक्ति का एक्सीडेंट हो गया था। वह बुरी तरह जख्मी था और उसके शरीर से लगातार खून बह रहा था। वह मौत और ज़िंदगी के बीच जूझ रहा था और लोगों से मदद के लिए अपील कर रहा था। वहाँ खड़े सभी लोग एक-दूसरे से कह रहे थे, "कोई इन्हें अस्पताल पहुँचाओ।"

लेकिन कोई आगे नहीं आ रहा था। सबसे बड़ी विडंबना तो यह थी कि कुछ लोग मोबाइल से वीडियो बना रहे थे और उसे फेसबुक तथा सोशल मीडिया पर डालकर अपनी संवेदना व्यक्त कर रहे थे। वाह रे समाज!

संवेदना का यह कौन-सा तरीका है?

यह विडंबना ही तो है लोगों में मानवता और दया दिखाने की। जख्मी व्यक्ति मौत और ज़िंदगी के बीच जूझ रहा है और लोग वीडियो एवं तस्वीरों पर मानवता और दया दिखाते हुए पोस्ट साझा कर रहे हैं।

तभी मैं भीड़ को चीरता हुआ उस जख्मी व्यक्ति के पास पहुँचा और उसे उठाने का प्रयास करने लगा। तभी कुछ लोगों ने कहा, "क्यों कानूनी पचड़े में पड़ रहे हो? पुलिस पूछताछ करेगी। बेकार के लफड़े में पड़ोगे।"

मैंने उन्हें ज़ोर से डाँटते हुए कहा, "कानून और कोर्ट भी इसकी पैरवी करते हैं कि घायल एवं जख्मी व्यक्ति को अस्पताल पहुँचाने वाले से किसी तरह की कोई पूछताछ न हो और घायल व्यक्ति को आपातकालीन उपचार एवं सुविधा मुहैया कराई जाए।" तुम सब पढ़े-लिखे जाहिल और गँवार हो! यह कहते हुए मैंने ऑटो से उसे अस्पताल पहुँचाया। वहाँ उसका तुरंत उपचार शुरू हो गया। थोड़ी देर में उसके परिवारजन भी पहुँच गए। तभी मुझे इंटरव्यू की याद आई। मैंने घड़ी में समय देखा तो 11:00 बज चुके थे। मेरे इंटरव्यू का वक्त समाप्त हो चुका था। फिर भी मैं बुझे मन से इंटरव्यू देने पहुँचा। जैसे ही इंटरव्यू कक्ष की ओर बढ़ा, तभी वॉचमैन ने कहा, "इंटरव्यू खत्म हो चुका है।"

मैंने उससे कहा, "अभी इंटरव्यूअर बैठे होंगे। यदि मुझे एक मौका मिल जाए तो मैं भी इंटरव्यू दे देता हूँ।"

मैंने वॉचमैन से प्रार्थना की। इंटरव्यूअर की स्वीकृति के बाद जैसे ही मैं इंटरव्यू कक्ष में पहुँचा, मैंने देखा कि वही व्यक्ति इंटरव्यू ले रहा था, जिसके जख्मी पिता को मैं अस्पताल पहुँचाकर आया था। मुझे देखते ही इंटरव्यूअर अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। उसकी आँखें डबडबा गईं।

उसने कहा, "आज मेरी वजह से नहीं, बल्कि आपकी वजह से मेरे पिता ज़िंदा हैं। आप जानते थे कि मेरे पिता को अस्पताल पहुँचाने तथा अन्य कार्यों में देरी हो सकती है और आपका इंटरव्यू भी छूट सकता है, फिर भी आपने उनकी मदद की।"

"आप मानवता की अद्भुत मिसाल हैं। यदि आज का हर नवयुवक आपकी तरह जागरूक हो जाए तो सड़क दुर्घटनाओं के शिकार हजारों लोगों की जान बचाई जा सकती है, जिनकी जान समय पर अस्पताल न पहुँचने के कारण चली जाती है।"

इंटरव्यूअर ने मेरा सर्टिफिकेट देखा और मुझे कंपनी के मैनेजर पद पर नियुक्त कर लिया। ईश्वर ने मेरे अच्छे कर्मों का फल मुझे दे दिया था।

आराधना श्रीवास्तव

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
रविवार, 11 अक्टूबर 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

पुस्तक समीक्षा

पंख तो थे पर आसमान नहीं मिला

कुछ कहानियाँ केवल पढ़ी नहीं जातीं, बल्कि दिल को छूकर सोचने पर मजबूर कर देती हैं। 'पंख तो थे पर आसमान नहीं मिला' ऐसी ही एक संवेदनशील रचना है, जो स्त्री के सपनों, उसकी इच्छाओं और सामाजिक बंधनों के बीच चलने वाले संघर्ष को शब्द देती है।

रचनाकर :
आचार्या शिखा चंदेल

आचार्या शिखा चंदेल की इस पुस्तक की मुख्य पात्र सौम्या के माध्यम से उन अनेक लड़कियों और महिलाओं की भावनाओं को सामने लाने का प्रयास किया गया है, जिनके भीतर आगे बढ़ने की इच्छा तो होती है, लेकिन पारिवारिक अपेक्षाओं और 'दुनिया क्या कहेगी' जैसी सोच के कारण उनके सपनों को खुलकर उड़ान नहीं मिल पाती।

पुस्तक का शीर्षक अपने आप में एक गहरा संदेश समेटे हुए है। पंख प्रतिभा, आत्मविश्वास और सपनों के प्रतीक हैं, जबकि आसमान उन अवसरों का प्रतीक है, जिनकी सहायता से व्यक्ति अपनी पहचान बना सकता है। जब किसी के पास योग्यता और सपने होते हुए भी उसे आगे बढ़ने का अवसर नहीं मिलता, तो उसकी स्थिति इस शीर्षक को सार्थक करती है।

यह रचना समाज के सामने एक महत्वपूर्ण प्रश्न रखती है—क्या बेटियों को केवल सपने देखने का अधिकार है, या उन्हें उन सपनों को पूरा करने का अवसर भी मिलना चाहिए?

लेखिका ने स्त्री के व्यक्तित्व, शिक्षा, स्वतंत्रता और आत्मसम्मान जैसे विषयों को संवेदनशील दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। यह पुस्तक पाठकों को सोचने के लिए प्रेरित करती है कि परिवार और समाज की वास्तविक जिम्मेदारी किसी के सपनों को सीमित करना नहीं, बल्कि उसे अपनी क्षमताओं को पहचानने और आगे बढ़ने का अवसर देना है।

इस पुस्तक का संदेश केवल महिलाओं तक सीमित नहीं है। यह हर उस व्यक्ति के लिए विचारणीय है, जिसने कभी परिस्थितियों के कारण अपने सपनों को पीछे छोड़ दिया हो। एक बेहतर समाज वही है, जहाँ प्रतिभा को अवसर मिले और किसी की पहचान सामाजिक अपेक्षाओं तक सीमित न रहे।

निष्कर्षत:,

'पंख तो थे पर आसमान नहीं मिला' एक संवेदनशील विषय पर आधारित रचना है, जो पाठकों को स्त्री के सपनों, उसकी स्वतंत्र पहचान और सामाजिक सोच पर आत्ममंथन करने का अवसर देती है।

"हर व्यक्ति को अपने सपनों के पंखों के साथ उन्हें पूरा करने के लिए खुला आसमान भी मिलना चाहिए।"

समीक्षक परिचय
रेनू ठाकुर, गृहिणी
स्थान: चांदपुर, देहरादून

प्रस्तुतकर्ता
डॉ. प्रीति समकित सुराना
संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति

एक सन्देशा देवरानी शुचि के नाम, स्नेह के साथ...

कुछ रिश्ते नाम से नहीं,
अपने सहज व्यवहार से पहचाने जाते हैं,
कुछ लोग बहुत कुछ कहे बिना भी
अपनी उपस्थिति से जीवन में एक जगह
बना जाते हैं।

शुचि!
तुम्हारे जन्मदिन पर
शब्दों में बहुत कुछ कहने से अधिक,
मन से कुछ शुभकामनाएँ देना चाहती हूँ।

जीवन की राह में
सुख के फूल तुम्हारे हिस्से आएँ,
दुख की धूप जब भी सताए,
अपनों के स्नेह की छाँव मिल जाए।

तुम्हारी आँखों में सपने रहें,
मन में विश्वास बना रहे,
समय चाहे जैसा भी हो,
तुम्हारे भीतर का उजास बना रहे।

रिश्तों की अपनी एक भाषा होती है,
जहाँ हर बात कही नहीं जाती,
कुछ भाव मन में ही रहते हैं,
कुछ आत्मीयता बिना शब्दों के भी समझी
जाती है।

आज तुम्हारे जन्मदिन पर
मेरी बस इतनी-सी कामना है,
तुम्हें जीवन में वह सब मिले
जिसकी तुम्हारे मन को अभिलाषा है।

स्वस्थ रहो, प्रसन्न रहो,
तुम्हारे दिन सुंदर और रातें सुकून भरी हों,
तुम्हारे हिस्से की खुशियाँ तुम तक बिना
किसी बाधा के पहुँचें
और तुम्हारी मुस्कान तुम्हारे अपनेपन की
पहचान बनी रहे।

**जन्मदिन की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ,
प्रिय शुचि!**

**स्नेह सहित
प्रीतिएक सन्देशा देवरानी शुचि के नाम,
स्नेह के साथ...**

स्नेह सहित
प्रीति

एक दुल्हन के आँसू

शादी के सात दिन बीत चुके थे, लेकिन घर के आँगन में अभी भी हल्दी और गेंदे के फूलों की मिलीजुली महक तैर रही थी। निधि के हाथों पर रची मेहंदी का रंग अब गहरा होकर धीरे धीरे उतरने लगा था। वह जब भी अपने हाथों को देखती, उसे अपनी माँ की याद आ जाती। विदाई के वक्त माँ ने एक लाल रंग का मखमली डिब्बा उसके हाथों में सौंपते हुए भर्राए गले से कहा था कि ये गहने उसकी नानी के हैं और कुछ उसकी माँ के हैं। माँ ने यह भी कहा था कि अब ये सब निधि के हैं और उसे इन्हें बहुत सँभालकर रखना है क्योंकि ये सिर्फ सोने के टुकड़े नहीं बल्कि उनके परिवार की इज्जत और पीढ़ियों का आशीर्वाद हैं। निधि ने नई नवेली दुल्हन होने की झिझक के कारण अपने ससुर जी से तिजोरी की चाबी नहीं माँगी थी। उसने सोचा कि अभी कुछ दिन वह उन गहनों को अपने कमरे की अलमारी में ही सुरक्षित रख लेगी।

लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। उसी रात करीब दो बजे मोहल्ले की बत्ती गुल थी। चारों तरफ सन्नाटा पसरा था। तभी एक पुरानी मोटरसाइकिल पर दो लड़के आए। उन्होंने बड़ी आसानी से घर की पिछली दीवार फाँदी और खिड़की की ढीली कुंडी खोलकर अंदर घुस गए। अंधेरे में टटोलते हुए उनके हाथ वह अलमारी लगी। उन्होंने उसमें से एक भारी काला थैला निकाला और चुपचाप उसी रास्ते से फरार हो गए। उन्हें बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि उस थैले के अंदर क्या रखा है।

अगली सुबह जब निधि ने कोई सामान निकालने के लिए अलमारी खोली, तो उसके पैरों तले से जमीन खिसक गई। वह काला थैला वहाँ नहीं था। उस थैले में बीस लाख से भी ज्यादा कीमत के आभूषण थे। उसमें नानी का पुराना पुश्तैनी हार, माँ की शादी की चूड़ियाँ, ससुराल से मुँह दिखाई में मिला रानी हार और सबसे कीमती वह सोने का छोटा सा टीका था जिसे निधि के पिता ने अपनी पहली तनख्वाह से बहुत अरमानों के साथ बनवाया था। घर में कोहराम मच गया। पुलिस बुलाई गई और रिपोर्ट दर्ज हुई। सास ने सीधे तौर पर तो कुछ नहीं कहा, लेकिन रसोई में बर्तन जोर जोर से पटककर अपनी नाराजगी जता दी। ससुर जी ने भी सबके सामने कह दिया कि नई बहू से इतनी बड़ी लापरवाही कैसे हो गई। निधि का पति अमन बहुत व्यावहारिक इंसान था। उसने निधि को समझाते हुए कहा कि वह परेशान न हो, बीमा कंपनी से पैसे मिल जाएंगे या पुलिस चोरों को पकड़ लेगी। लेकिन निधि जानती थी कि थानों की फाइलों में गुम हुए गहने कभी वापस नहीं लौटते। उसे गहनों के जाने से ज्यादा उस भरोसे के टूटने का दुख था जो उसकी माँ ने उस पर किया था।

निधि अंदर ही अंदर घुट रही थी। ऐसे में उसकी छोटी बहन ने उसे फोन पर सलाह दी कि वह इंटरनेट के लिए एक वीडियो बनाए। बहन का कहना था कि आजकल सोशल मीडिया की ताकत बहुत बड़ी है और शायद इससे कुछ मदद मिल जाए। निधि ने शुरुआत में साफ मना कर दिया। उसे लगा कि लोग क्या सोचेंगे कि नई बहू इंटरनेट पर बैठकर रो रही है। लेकिन उस रात जब पूरा घर सो गया, तो निधि की आँखों से नींद कोसों दूर थी। उसे बार बार अपनी माँ का रोता हुआ चेहरा याद आ रहा था। उसने हिम्मत जुटाई और अपने मोबाइल का कैमरा चालू कर लिया। उस वीडियो में कोई दिखावा नहीं था।

वह अपने शादी के जोड़े में बैठी थी, उसके मेहंदी लगे हाथ जुड़े हुए थे और आँखों से लगातार आँसू बह रहे थे। उसने रुँधे हुए गले से कहा कि वह नहीं जानती कि वे भैया कौन हैं जो उसका थैला ले गए हैं। उसने बताया कि उस थैले में सिर्फ सोना नहीं है, बल्कि उसके मायके की यादें, नानी की निशानी और माँ की चूड़ियाँ हैं। उसने हाथ जोड़कर विनती की कि वे चाहे तो कोई और कीमती सामान रख लें, लेकिन उसकी माँ और नानी की निशानियाँ लौटा दें। यह कहते हुए वह फफक कर रो पड़ी। उसने वीडियो को इंटरनेट पर डाल दिया और कैप्शन में लिखा कि कृपया मेरे गहने लौटा दो।

पहले एक घंटे में उस वीडियो को सिर्फ सौ लोगों ने देखा। लेकिन भावनाएं जब सच्ची होती हैं, तो वे अपनी राह खुद बना लेती हैं। धीरे धीरे वह वीडियो फैलने लगा। कुछ लोगों ने इसे नाटक कहा, लेकिन बहुत सी महिलाओं ने निधि के दर्द को अपना दर्द समझा। तीसरे दिन तक उस वीडियो को आठ लाख से ज्यादा लोग देख चुके थे और वह शहर भर में चर्चा का विषय बन गया था।

उसी तीसरे दिन, शहर के दूसरे किनारे पर बनी एक कच्ची बस्ती के छोटे से कमरे में दो लड़के बैठे थे। उनके नाम विकास और सुनील थे। दोनों की उम्र मुश्किल से बीस बाइस साल रही होगी। वे दोनों राजमिस्त्री के साथ मजदूरी का काम करते थे। लेकिन कुछ समय पहले काम बंद हो जाने के कारण वे बेरोजगार हो गए थे। विकास की माँ बहुत बीमार रहती थी और उसके इलाज के लिए पैसों की सख्त जरूरत थी। सुनील का छोटा भाई स्कूल की फीस न भर पाने के कारण पढ़ाई छोड़ चुका था। मजबूरी ने उन्हें चोरी के रास्ते पर धकेल दिया था। जब उन्होंने वह थैला खोला, तो उनकी आँखें फटी रह गईं। उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी में इतना सोना एक साथ सिर्फ सुनार की दुकान के शीशे के पीछे ही देखा था। विकास ने गहरी साँस लेते हुए कहा कि अब उसकी माँ का इलाज किसी बड़े अस्पताल में हो जाएगा।

तभी सुनील के मोबाइल पर इंटरनेट चलाते हुए अचानक निधि का वही वीडियो सामने आ गया। वीडियो में एक नई दुल्हन रो रही थी, उसके हाथ जुड़े हुए थे। सुनील की अपनी सगी बहन की शादी भी दो महीने पहले ही हुई थी। विदाई के वक्त उसकी माँ ने भी अपनी बेटी को एक छोटा सा हार देते हुए बिल्कुल यही शब्द कहे थे कि यह घर की इज्जत है। सुनील का दिल धक से रह गया। विकास ने झुंझलाते हुए कहा कि इस वीडियो को बंद कर दे क्योंकि वे चोर हैं, कोई संत महात्मा नहीं। लेकिन वीडियो बंद होने के बाद भी वह रोता हुआ चेहरा उन दोनों की आँखों के सामने बार बार आ रहा था। उस रात सुनील बिल्कुल नहीं सो सका। उसे बार बार अपनी बहन का चेहरा दिखाई दे रहा था। उसे अपनी माँ की दी हुई वह सीख याद आ रही थी कि इंसान को भूखे मर जाना चाहिए लेकिन कभी किसी दूसरे का हक नहीं मारना चाहिए।

चौथे दिन की सुबह करीब चार बजे, जब पूरी गली गहरी नींद में सोई हुई थी, वही पुरानी मोटरसाइकिल एक बार फिर निधि के घर के सामने आकर रुकी। चेहरे पर कपड़ा बाँधे हुए उन दोनों लड़कों ने वह काला थैला चुपके से घर के मुख्य दरवाजे के अंदर फेंक दिया और बिना कोई आवाज किए वहाँ से चले गए।

सुबह जब निधि की सास ने दरवाजा खोला, तो उन्होंने देखा कि दरवाजे के पास वही काला थैला पड़ा है। थैले पर थोड़ी मिट्टी लगी थी, लेकिन वह पूरी तरह से बंद था। उन्होंने तुरंत पुलिस और पूरे परिवार को बुलाया। जब पुलिस के सामने वह थैला खोला गया, तो उसमें रखा एक एक गहना अपनी जगह पर सुरक्षित था। चोरों ने गहने की एक छोटी सी डिब्बी तक नहीं खोली थी। उस थैले के अंदर एक मुड़ा हुआ कागज का टुकड़ा भी पड़ा था। जब निधि ने उसे खोला, तो उसमें टूटे फूटे अक्षरों में लिखा था कि हमें माफ कर दो दीदी, हमसे बहुत बड़ी गलती हो गई। यह पढ़ते ही निधि वहीं जमीन पर बैठ गई और उसके सब्र का बाँध टूट गया। वह फूट फूट कर रोने लगी, लेकिन यह रोना दुख का नहीं बल्कि राहत और किसी अनजान पर विश्वास के जीत जाने का था।

यह खबर जंगल की आग की तरह पूरे शहर में फैल गई। लोगों को यकीन नहीं हो रहा था कि आज के जमाने में कोई चोर इतनी बड़ी रकम वापस कर सकता है। निधि ने उसी दिन एक और वीडियो बनाया। इस बार उसके चेहरे पर आँसू नहीं बल्कि एक बहुत ही सुकून भरी मुस्कान थी। उसने हाथ जोड़कर कहा कि वह उन भाइयों को धन्यवाद देना चाहती है जिन्होंने उसके गहने नहीं बल्कि इंसानियत पर उसका भरोसा लौटाया है।

उस रात वह काला थैला तो लौटा ही, लेकिन उसके साथ यह उम्मीद भी लौट आई कि इंसान के अंदर का ईमान कभी पूरी तरह नहीं मरता। वह बस गरीबी और मजबूरी की धूल के नीचे दब जाता है और जब कोई सच्चे दिल से गुहार लगाता है, तो वह ईमान फिर से जाग उठता है।

महेन्द्र तिवारी

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
मंगलवार ,13 अक्टूबर 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

दोष दर्शन की दृष्टि न देना प्रभु।

दोष दर्शन की दृष्टि न देना प्रभु।
उसके पहले नज़र छीन लेना।

घर गृहस्थी में हूं, बाल बच्चों में हूं।
तेरी किरपा से खुश हूं मैं संसार में।
काम करते हुए, तेरा सुमिरन करूं।
बस ये पतवार छूटे न मझधार में।

डोर ये प्रेम की, मोह बंधन बने,
उसके पहले ही घर छीन लेना।।

कितना सुंदर बनाया है तूने जगत,
तेरी रचना को मैं प्यार क्यूं ना करूं?
मेरे मांगे बिना, तूने सब कुछ दिया,
सर झुकाकर ये स्वीकार क्यूं ना करूं?

पर इसी में उलझकर तुझे छोड़ दूं,
तो उड़ानों से पर छीन लेना।

हो के इंसां, मैं इंसानियत छोड़ दूं,
मुझको खुदगर्ज़ इतना बनाना नहीं।
भेद, अपने - पराये में करने लगूं,
मुझको वो दिन कभी भी दिखाना नहीं।

छीन लेना उमर, चाहे साँसों की तू,
पांव से तू डगर छीन लेना।

शेखर "अस्तित्व"

नौनिहाल

चिंतित हम बैठे हैं
दुनिया भी ऐसी क्या होगी ?
केवल सपने ही सपने,
कुछ न कर पाने की मजबूरी।

हम भी भुगत रहे हैं,
ऐसी क्या दुनियादारी ?
नेह लुटा दो, राह सुझा दो,
रहेगी कोई कसर न पूरी।

हैं नौनिहाल इस जग के,
कोई ऊँच-नीच न जानें,
अपनी करतब औ' साहस को,
केवल हम पहचानें।

इकरार हैं हम,
इसरार हैं हम,
इस जगती के दुःख के
तारनहार हैं हम।

जरा तो सीधा कर दो,
थोड़ी ऊर्जा बस भर दो।
पर सब तो हैं मुख फेरे,
खुद में हैं सिमटे-सिमटे।
कोई गले लगा नहीं सकता,
कितने चकित हैं हम ?

अरुण कुमार झा
'विनोद'

मोहब्बत: का अधूरा हिसाब

अजीब क़र्ज़ है मोहब्बत का भी,
उम्र गुज़र जाती है, हिसाब नहीं होता।

कुछ लोग रूह में इस क़दर उतर जाते हैं,
कि उनके बिछड़ने से भी इश्क़ ख़त्म नहीं होता।

कभी-कभी उम्र भर साथ निभाने से भी,
किसी अपने के दिल में ठिकाना नहीं होता।

कुछ रिश्ते मुकम्मल होकर भी अधूरे रहते हैं,
हर मिलन का अंजाम मिलना नहीं होता।

कुछ एहसास हिसाब से परे होते हैं,
हर मोहब्बत का कोई नाम नहीं होता।

और कुछ क़र्ज़ होते हैं रूह पर लिखे हुए,
जिन्हें चुकाने का कोई मुक़ाम नहीं होता।

शायद इसी का नाम मोहब्बत है,
जहाँ सब कुछ खोकर भी इंसान ख़ाली नहीं होता।

क्योंकि कुछ लोग बिछड़कर भी दिल में रहते हैं,
और कुछ क़र्ज़... उम्र भर अदा नहीं होते।

उमेश सिंह

ऊर्जा

जब हो जाती हूँ शक्तिविहीन
ऊर्जा का हो जाता है खाली भंडार
माँ तुम्हे याद करते ही पल में
होता है नव जीवन का संचार।
तुम जीवन दायिनी हो
तुम्हारी भेंटे हैं अपार
नमन करें और पा जायें माँ
सुखों के सारे संसार।
जब अंधकार छा जाए मन में
निराशा छाए दिल के द्वार
तुम ज्योत सी बन के जगमग हो
मिल जाएं आशा के उपहार।
हे माँ! तुम साथ सदा रहना
जैसे संग रहे परिवार
जब पास तुम्हारे आऊँ मैं
कर देना आशु का उद्धार।

डॉ. आशु जैन

नफे सिंह योगी

क्रोध परिवार पर वार

आओ परिचय करवाता हूँ, मैं क्रोध के परिवार से।
यार, प्यार व रिश्तेदारी, और इसके घर - बार से।।

जिद इसकी बहना ऐसी है, हरदम तकरार कराती।
हिंसा इसकी घरवाली जो, खून-खराबा करवाती।।
अहंकार बड़ा भाई इसका, सबसे बड़ा खुरापाती ।
खौफ बाप इसका ऐसा है, बड़ा हठिला जज्बाती।।
बचकर रहना होगा इसके, अमानवीय व्यवहार से।
आओ परिचय करवाता हूँ, मैं क्रोध के परिवार से।।

निंदा-चुगली बड़ी बेटियाँ , घर-घर आग लगाती हैं।
बैर पुत्र इकलौता ऐसा, न बना कभी बराती है।।
बहू ईर्ष्या इसकी ऐसी, खुशी देख जल जाती है।
घृणा पोती ऐसी अनोखी, प्रेम-भाव मिटवाती है ।।
रिश्ते - नाते टूट रहे सब, इसी के अत्याचार से।
आओ परिचय करवाता हूँ, मैं क्रोध के परिवार से।।

दादा द्वेषिया बड़ा कसुता, रोळा-रंजिश पालता है।
मात उपेक्षा घणी डराणी, कहते सभी कालका है।।
झूठ पुराना दोस्त गजब का, सच पे पर्दा डालता है।
पछतावा जो पीछे-पीछे, आँसू खूब निकालता है।।
खुशियों का संसार उजड़ता, इसके दुर्व्यवहार से।
आओ परिचय करवाता हूँ, मैं क्रोध के परिवार से।।

बुद्धि हरता, चैन छीनता, तन-मन आग लगाता है।
अपना ही अपनों से लड़के,रिश्तों को ठुकराता है।।
मीठी बोली कड़वी करके, मन में विष भर जाता है।
पलभर का उन्माद बुरा ये ,जीवन भर रुलवाता है।।
घर - आँगन वीरान हुए हैं, इसी के वार-प्रहार से।
आओ परिचय करवाता हूँ, मैं क्रोध के परिवार से।।

प्रेम - प्यार अपनाकर मन में, नफरत दूर भगाएँगे।
क्षमा,दया के दीप जलाके, जीवन सफल बनाएँगे।।
धीरज और विवेक के बल पर,क्रोध को दूर हटाएँगे।
मिलजुलके परिवार में रहकर,स्वर्ग धरा पर लाएँगे।।
खुशियाँ लौटेंगी जीवन में, अच्छे आचार-विचार से।
आओ परिचय करवाता हूँ, मैं क्रोध के परिवार से।।

नवरात्रि में माँ के स्वरुप

माँ **शैलपुत्री** हिमाचल की पुत्री
दृढ़ शक्ति विश्वास, शांत दाती ||

माँ **ब्रह्मचारिणी** जग तारणी
त्याग साधना शक्ति दायनी||

माँ **चंद्रघंटा** माथे में चंद्रमा
शांत शक्ति की स्वरुपा माँ||

माँ **कुष्मांडा** चतुर्थ दिवस
ब्रह्माण में उर्जा का स्त्रोत||

माँ **स्कंदमाता** पंचम दिवस
ज्ञान और वात्सल का देवी ||

माँ **कात्यायनी** षष्ठ दिवस
योद्धा , वीरसाहस की देवी||

माँ **कालरात्रि** सप्तमी दिवस
आसुरों का नाश, डर भगाये ||

माँ **महागौरी** अष्ठम् दिवस
तपऔर पवित्रता का प्रतीक|

माँ **सिद्धिदात्री** दिवस नवम्
काम सिद्ध व ज्ञान प्रतीक||

सत्य मार्ग, जीवन पथ आधार
सत्य ज्योति जले हो जय कार||

ऊषा बौगरहिया

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
गुरुवार ,15 अक्टूबर 2026

ममता भरे खिलौने

मुनमुन से उसकी माँ लगभग प्रतिदिन कहती हैं -"अब खिलौने नहीं खेलती तो राम आसरे की बेटी को दे दो। कक्षा आठवीं के बाद खेलना छोड़ दिया था। कक्षा नौ में आने के बाद खेलना ही छोड़ दिया है।"

"हाँ,माँ समय मिलने पर छाँट दूँगी।' मुनमुन फिर लैपटॉप पर व्यस्त हो गई। "अरे, तो तुम उठा कर दें दो न।" पापा ने मम्मी से कहा तो मुनमुन सिहर गई।

"अरे नहीं पापा, आज ही देखती हूँ।

सुंदर सुंदर गुड़िया गुड्डा, टैडी बियर को गले से लगा कर रखती थी। वो उसके अपने थे, जिन्हें वह थपकी दिया करती थी। जीवंत खिलौने थे वो, उन्हें वह सहलाती थी, कपड़े पहना देती थी,संवार देती थी। गिर जाता था तो देखती थी चोट तो नहीं लग गई।

रामआसरे कई दिनों से कह रहा है कि उसकी बिटिया एक गुड़िया लाने के लिए कह रही है।उसकी सहेली का एक गुड्डा है। उसे कई दिन से रोक रखा है कि ' इसको किसी और से मत ब्याहना।मेरा बापू मेरे लिए गुड़िया खरीद कर लायेगा।तब हम दोनों का ब्याह रचायेंगे।' रामआसरे की बात सुनकर उसकी बेटी पर भी तरस आ गया था। मुनमुन ने एक गुड़िया उठाई जिसका नाम उसने तारा रखा था,वह सितारे और नग जड़ें हुए वस्त्र पहनती थी। सोचा इसे ही ठीक कर देगी।ढीले पड़ गए हाथ-पैर कस देगी,बिखरे बाल अच्छी तरह संवार देगी।

सचमुच उसे ठीक-ठाक करते हुए बचपन के खेल स्मरण हो आये। गुड़िया की बारात निकालते थे।रीना का गुड्डा बड़ा सलोना सा था। डब्बों की ढोलक बजा कर बारात निकाली। जयमाल डलवाई गई। बाल सखियां जो रीति-रिवाज जानती थी संपन्न करती गईं। उसकी गुड़िया रीना के गुड्डे के साथ बिदा कर दी गई।उसके बिना दो दिन बहुत रोई। दोनों के परिवार वाले परेशान। अंततः रीना ने गुड्डा सहित उसकी गुड़िया उसे दे दी। उसने उसे गले से लगा लिया।

"मेरी प्यारी तारा।"

रीना के पिता का स्थानांतरण हुआ तो गुड्डा का मोह हुआ वापस ले गई। उसने भी दे दिया। कितना भोला होता है बचपन। और अनभिज्ञ होते हैं बच्चे। सोचते सोचते तारा सज-धज कर तैयार कर दी गई। मुनमुन उस पर निहाल हुई। रामआसरे की बेटी तोड़ तो नहीं देगी। कितने नाजों से पाला है। टैडी बियर सोमू की ओर देखा। जैसे वह उदास हो गया हो। 'सोमू तू अभी मेरे पास ही रहेगा।'उसने पुचकारा। आज तेरे कपड़े बदल दूँगी। नहलाना भी पड़ेगा कितना गंदा हो गया है। वह जानती है कि अब वह उन्हें नहीं खेलेगी लेकिन वह कहीं असुरक्षित रहें यह भी नहीं चाहती। उसने सोमू को गोद में उठा लिया। मम्मी ने देखा तो वहीं आ गई।

"कितनी नई-नई लग रही है तेरी डाल।"

उन्होंने रामआसरे को आवाज दी।वह घबरा गई।उसके दिल का टुकड़ा है। उसके ये खिलौने ममता भरे हैं अभी तो मुश्किल लग रहा है।

उसने मम्मी के हाथ से अपनी गुड़िया ले ली। "क्यों क्या हुआ?" माँ ने आश्चर्य से पूछा।

"तारा को मेरे पास रहने दो,कल मैं दूसरी गुड़िया निकाल दूँगी।" कहकर उसने टैडी बियर सोमू को कंधे पर टाँग लिया।

आभा श्रीवास्तव

आ गईं माता रानी

आई नवरात्रि आ गई जगदंबा,
अपने नौ रूप माता करती कृपा।

मन को शक्ति-ऊर्जा देती माता,
सारा जगत शीश नवाता।

जगत की पालनहार हैं माता!
उनसे ही संसार संभलता।

वह ही दुर्गा वह ही भवानी,
वह ही शक्ति काली।

उनके दरश को आएँ भक्त जन
भजन गाएँ दे ताली |

घट -घट आईं हैं माता रानी,
सुंदर दरश को देने।

हम सांसारिक जीव खड़े हैं,
तेरी कृपा को पाने।

माँ जगजननी माँ भवानी,
अपनी कृपा दिखादे |

हर आंगन में खुशियां नाचें,
सबको आशीष देदे |

सीता गुप्ता

ऊर्जा

शक्ति प्रदायिनी मां योग माये
शक्ति का संचार करो।
डटे रहें हम कर्म क्षेत्र में
धैर्य शक्ति का दान करो।

बाधाओं के घने मेघ जब
चित् पटल पर छा जाएं
सहनशक्ति और संयम की
पावन पवन प्रसार करो।

नहीं रहे कोई भेदभाव
आपस में भाईचारा हो
धर्म युक्त हो काम, अर्थ
विमल विवेक प्रदान करो।

शक्तिमान की अभिन्न शक्ति
तुमसे ही जग में जीवन है
मन के सभी कलुष मिटाकर
मधुर भाव का प्रकाश करो।

सभी तुम्हारी संताने मां
सबका तुम पालन करतीं
अन्न जल और वायु देकर
प्राणों की रक्षा करतीं।

हम शरण पड़े हैं मां तेरी
अपने आंचल में आश्रय दो
दैवी सदगुण जागृत कर
प्रेम भक्ति प्रदान करो।

चंद्रकांता अग्रवाल

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
शुक्रवार, 16 अक्टूबर 2026

बचपन की मुट्ठी से फिसलता बचपन

(आइये पढ़ते हैं, विषय एक, विचार अनेक,....)

निकिता अग्रवाल

बचपन, जिसमें समझ ना हो
अपने - पराये का भेद ना हो
सांप के लिए भी वो जिद करें,
चाँद को पकड़ने की वो कोशिश करें,

ना हार का भय, ना जीत का दम्भ और ना ही दुनियादारी की चिंता, इसलिए जब कोई बड़ा भी जब जिद करता है तो हम मुस्कुरा कर कहते है अभी बचपना है इसमें।

बड़े मजे के होते थे वो हमारे बचपन के दिन या हमारे भाई बहनों के बचपन के दिन, आज भी याद करो तो वह खुशी की लहर दिल और दिमाग में हिल्लोरे लेने लगती है , इसके पीछे सबसे बड़ा कारण था संयुक्त परिवार,बच्चों को समय देने के लिए,हर घर में, बहुत से लोग मौजूद रहते थे, बच्चे आपस में एक दूसरे से और बड़ों से ही सीख पाते थे और जिस घर के जो संस्कार होते थे वही बच्चों में आते थे लगभग पूरे देश में यही होता था

लेकिन अब...! हमने बहुत तरक्की कर ली है।

एक से बढ़कर एक आविष्कार हुए। विज्ञान ने नई ऊँचाइयाँ छुईं। तकनीक ने हमारी दुनिया बदल दी। जानकारी अब हमारी उँगलियों पर उपलब्ध है। और माता - पिता यही चाहने लगे हैं कि हमारा बच्चा जल्दी से जल्दी सब कुछ सीख ले। वह समझदार बने, आत्मनिर्भर बने, प्रतियोगिता में आगे निकले और दुनिया की हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहे।
हम उसे आधुनिक सुविधाएँ दे रहे हैं, लेकिन क्या उसे मिट्टी में खेलने, पेड़ों को निहारने, बारिश में कागज़ की नाव चलाने और बेवजह खिलखिलाने की वजह भी दे रहें हैं।
विज्ञान और तकनीक जिस गति से आगे बढ़ रहे हैं, उसे देखकर लगता है कि एक दिन ऐसा भी आ सकता है, जब रोबोट बच्चों की देखभाल और परवरिश में बड़ी भूमिका निभाएँगे। वे उन्हें ज्ञान देंगे, अनुशासन सिखाएँगे और दुनिया को समझने में मदद करेंगे।
लेकिन क्या वे उस अनायास मिलने वाली हँसी का विकल्प बन पाएँगे, जो दादी की कहानी सुनते-सुनते आती थी? क्या वे उस अपनत्व की जगह ले पाएँगे, जिसमें माँ बच्चे की बात बिना कहे समझ जाती थी? क्या वे उस आनंद को पूरी तरह महसूस करा पाएँगे, जो किसी बड़े के साथ छोटी-सी शरारत करने में मिलता था।
बच्चों को जल्दी समझदार बनाने के लिए आज के माता - पिता ने उन्हें इतना व्यस्त कर दिया है कि वे बेवजह हँसना भूल गए,उन्हें इतना ज्ञान दे दिया हैं कि,उन्हें किसी बात पर आश्चर्य ही नहीं होता,उन्हें इतना अनुशासित बना दिया है कि छोटी-छोटी शरारतों के लिए उनके जीवन में ना समय है ना जगह

बचपन की मुट्ठी से फिसल रहा है बचपन

और फिर हम उस दौर में पहुंच जायेंगे, जहां फिर रावण और हिरण्याकश्यप, कंश जैसे बच्चे पैदा होंगे, जो बहुत बलशाली,ज्ञानी तो होंगे लेकिन उन में प्रेम,दया,ममता की भावनायें नहीं होगी और फिर वे विनाश करके दुनिया को वही पहुंचा देंगे जहां से दुनिया की शुरुआत हुई थी

डॉ. प्रीति समकित सुराना

बचपन! यह शब्द आते ही स्मृतियों के आँगन में न जाने कितने रंग बिखर जाते हैं। मिट्टी की सोंधी गंध, बारिश में भीगने की शरारत, कागज की नाव, पेड़ों की छाँव, दोस्तों के साथ खेलते हुए रूठना और फिर पल भर में मान जाना। बचपन की दुनिया छोटी जरूर होती थी, लेकिन उसमें खुशियों का आकाश बहुत विस्तृत हुआ करता था। मुट्ठी भर कंचों में खजाना मिलता था और टूटी हुई टहनियों से भी कल्पनाओं का महल खड़ा हो जाता था। तब साधन सीमित थे,
मगर सपनों की कोई सीमा नहीं थी। आज साधनों की प्रचुरता है, लेकिन कहीं न कहीं बचपन की सहजता कम होती दिखाई देती है। कभी कभी सोचती हूँ, क्या सचमुच समय बदल गया है या हमने समय के साथ बचपन की परिभाषा भी बदल दी है? आज बच्चों के हाथों में खिलौनों के साथ मोबाइल है, उनके सामने खेलने के मैदान से अधिक डिजिटल संसार है और उनकी दिनचर्या में अपनी इच्छा से जीने के लिए बहुत कम समय बचा है।

सोनम लड़ीवाला

बचपन जीवन का वह अनमोल समय है, जिसमें छोटी-छोटी खुशियाँ भी बड़े रूप ले लेती हैं। मिट्टी में खेलना, बारिश में भीगना, दोस्तों के साथ शरारतें करना, दादी-नानी की कहानियाँ सुनना और बिना किसी चिंता के सपनों की दुनिया में घूमना—यही तो बचपन की पहचान है। लेकिन आज बदलते समय के साथ बचपन की यह सहजता कहीं खोती जा रही है। बच्चों के हाथों से खिलौनों की जगह मोबाइल ने ले ली है। खुले मैदानों में गूँजने वाली किलकारियाँ अब स्क्रीन तक सिमट गई हैं।
पढ़ाई, प्रतियोगिता और बेहतर भविष्य की दौड़ में बच्चों पर इतनी अपेक्षाओं का बोझ डाल दिया गया है कि उनका वर्तमान ही उनसे छिनने लगा है। माता-पिता अपने बच्चों को सफल बनाने की चाह में कभी-कभी यह भूल जाते हैं कि बचपन केवल भविष्य की तैयारी नहीं, वर्तमान में जीने का भी नाम है। बच्चों को समय से पहले बड़ा बनाने की हमारी कोशिश में उनका निश्चिंत बचपन मुट्ठी से रेत की तरह फिसल रहा है। उनकी जिज्ञासाओं को उत्तर, उनकी शरारतों को अवसर और उनके सपनों को उड़ान चाहिए;

केवल निर्देश और अनुशासन नहीं। तकनीक का उपयोग गलत नहीं, लेकिन जब वही बच्चों की दुनिया बन जाए और अपनों का साथ पीछे छूटने लगे, तब ठहरकर सोचने की आवश्यकता है। बचपन लौटकर नहीं आता। इसकी स्मृतियाँ जीवनभर साथ रहती हैं।
हमें बच्चों को केवल सफल इंसान नहीं, संवेदनशील और प्रसन्न इंसान भी बनाना है।बच्चों का भविष्य को सँवारने के लिए उनका वर्तमान भी सँवारें, ताकि बड़े होने पर उनके पास सिर्फ उपलब्धियों की सूची ही नहीं, बचपन की खूबसूरत यादें भी हों।

मीना विवेक जैन

कभी मुट्ठी में बंद थी इमली की गुठली, कंचे, और माँ के आँचल का कोना। आज उसी मुट्ठी में मोबाइल है। बचपन वही है, पर उसकी मुट्ठी बदल गई है। और इसी मुट्ठी से वो धीरे-धीरे फिसल रहा है।तो क्या बचपन खत्म हो गया? नहीं। बचपन फिसला है, खत्म नही हुआ ,बदलते समय के साथ बदलाव आएगा ही। यह प्रकृति का नियम है।पहले के बचपन में समय बहुत था, साधन कम थे। आज के बचपन में साधन बहुत हैं, समय कम है।पहले माता-पिता के पास समय था, ज्ञान कम था।
आज ज्ञान बहुत है, समय कम है।

हम रोक नहीं सकते कि बच्चा मोबाइल न देखे, क्योंकि दुनिया ही मोबाइल पर चल रही है। हम रोक नहीं सकते कि वह अंग्रेजी न सीखे, क्योंकि प्रतियोगिता उसी की है। परिवर्तन को कोसने से नहीं, समझने से बात बनेगी।आज के बच्चे के पास जानकारी है, उसके पास सवाल हैं। अगर हम नहीं सुनेंगे तो वो मोबाइल को सुनाएगा। रोज 15 मिनट बिना सलाह के सिर्फ सुनो - आज स्कूल में क्या हुआ, किससे झगड़ा हुआ, क्या अच्छा लगा। बचपन फिसल रहा है, यह सच है। पर माँ की तरह अगर हम उसे हौले से पकड़ना सीख लें, तो वो गिरेगा नहीं।
हमें बच्चों को पुराने जमाने में नहीं ले जाना है, हमें पुराने जमाने की जड़ों को नए जमाने में ले आना है। मुट्ठी वही रहेगी, बस उसमें अब कंचों के साथ-साथ की-बोर्ड भी होगा। इमली के साथ-साथ ज्ञान भी होगा। और अगर उस मुट्ठी में हमारा हाथ भी होगा, तो बचपन फिसलेगा नहीं, संभलेगा। और आगे बढ़ेगा भी।

सुबह विद्यालय, फिर गृहकार्य, ट्यूशन, प्रतियोगिताओं की तैयारी और उसके बाद स्क्रीन की दुनिया। इस व्यस्तता के बीच बचपन कब अपनी ही मुट्ठी से रेत की तरह फिसल जाता है, पता ही नहीं चलता।

बचपन की सबसे बड़ी विशेषता उसकी स्वाभाविकता है। बच्चा किसी फूल को देखकर ठहर सकता है, किसी चींटी को चलते देखकर प्रश्नों की झड़ी लगा सकता है और आकाश में उड़ते पक्षी को देखकर अपने पंखों की कल्पना कर सकता है। उसके लिए दुनिया केवल देखने की वस्तु नहीं, जानने और अनुभव करने का अवसर होती है। लेकिन जब हर गतिविधि का उद्देश्य निर्धारित कर दिया जाए, हर घंटे का हिसाब रखा जाए और हर प्रयास को उपलब्धि की कसौटी पर परखा जाए, तब सहज जिज्ञासा धीरे धीरे अपेक्षाओं के बोझ तले दबने लगती है।

शेष अंक का लेख कल प्रकाशित होगा

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
शनिवार, 17 अक्टूबर 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

बचपन की मुट्ठी से फिसलता बचपन

(आइये पढ़ते हैं, विषय एक, विचार अनेक,....)

कल के शेष अंक का लेख प्रकाशित है।...

विडंबना देखिए, हम बच्चों को खुश रखने के लिए महँगे खिलौने खरीदते हैं, उनकी सुविधाओं के लिए अपनी सामर्थ्य से अधिक प्रयास करते हैं, उनकी शिक्षा और भविष्य के लिए चिंतित रहते हैं; फिर भी कई बार उन्हें वह सबसे जरूरी चीज नहीं दे पाते, जिसकी उन्हें सबसे अधिक आवश्यकता होती है, हमारा समय। उनके पास अनेक खिलौने होते हैं, लेकिन उनके साथ खेलने वाला कोई नहीं। उनके पास संवाद के अनेक डिजिटल माध्यम होते हैं, लेकिन मन की बात सुनने वाला कोई नहीं। घर में सब साथ होते हैं, फिर भी हर व्यक्ति अपनी अपनी स्क्रीन में व्यस्त रहता है। ऐसे में बच्चे अपनी भावनाएँ किससे साझा करें? उनकी छोटी छोटी उलझनों, अनकहे डर और अनगिनत जिज्ञासाओं को समझने के लिए हमारे पास कितना समय बचता है?

यहाँ प्रश्न तकनीक का विरोध करने का नहीं, बल्कि उसके विवेकपूर्ण उपयोग का है। विज्ञान और तकनीक ने बच्चों के लिए ज्ञान के नए द्वार खोले हैं। वे घर बैठे दुनिया को जान सकते हैं, नई विधाएँ सीख सकते हैं और अपनी रचनात्मकता को अभिव्यक्ति दे सकते हैं। किंतु जब आभासी संसार वास्तविक अनुभवों का स्थान लेने लगे, तब संतुलन बिगड़ने लगता है। स्क्रीन पर प्रकृति का दृश्य देखना और पेड़ के नीचे बैठकर हवा का स्पर्श अनुभव करना दो अलग अलग अनुभूतियाँ हैं। किसी खेल को मोबाइल पर खेलना और मैदान में मित्रों के साथ हार जीत का आनंद लेना भी एक जैसा नहीं है। जीवन की अनेक सीखें पुस्तकों और उपकरणों से नहीं, बल्कि अनुभवों से मिलती हैं।

बचपन पर बढ़ता शैक्षणिक और सामाजिक दबाव भी चिंता का विषय है। हम चाहते हैं कि हमारा बच्चा हर क्षेत्र में श्रेष्ठ हो। उसके अंक अच्छे हों, व्यवहार आदर्श हो, प्रतिभा असाधारण हो और भविष्य सुरक्षित हो। हमारी अपेक्षाएँ कई बार इतनी बढ़ जाती हैं कि बच्चे की अपनी रुचियाँ और क्षमताएँ उनके पीछे छिप जाती हैं। तुलना का एक अदृश्य संसार उसके चारों ओर खड़ा हो जाता है। पड़ोसी का बच्चा क्या कर रहा है, रिश्तेदारों के बच्चों ने कितने अंक प्राप्त किए, किसने कौन सी प्रतियोगिता जीती, इन सबके बीच बच्चे को यह समझने का अवसर ही नहीं मिलता कि वह स्वयं क्या चाहता है।

हर बच्चा अलग होता है। किसी की रुचि पुस्तकों में होती है, किसी की चित्रकारी में, किसी की संगीत में और किसी की प्रकृति के साथ समय बिताने में। किसी की गति तेज होती है, तो किसी को सीखने में थोड़ा अधिक समय लगता है। इन भिन्नताओं को स्वीकार करना ही वास्तविक शिक्षा का पहला चरण है। बच्चे को लगातार यह अनुभव कराना कि वह किसी दूसरे से कम है, उसके आत्मविश्वास को कमजोर कर सकता है। हमें उसकी तुलना दूसरों से करने के बजाय उसके अपने प्रयासों और प्रगति को पहचानना चाहिए।

आखिर शिक्षा का उद्देश्य केवल प्रतिस्पर्धा में आगे निकलना नहीं, बल्कि एक संवेदनशील, विवेकशील और आत्मनिर्भर मनुष्य का निर्माण करना भी है। बचपन का एक और महत्त्वपूर्ण पक्ष है, खेल। खेल केवल समय बिताने का साधन नहीं, बल्कि जीवन को समझने की पहली पाठशाला है। खेलते हुए बच्चा सहयोग करना सीखता है, हार स्वीकार करना सीखता है, नियमों का सम्मान करना सीखता है और कभी कभी अपने प्रयासों में असफल होकर फिर से उठना भी सीखता है।

मिट्टी में खेलते हुए हाथ गंदे हो सकते हैं, कपड़े खराब हो सकते हैं, लेकिन इसी प्रक्रिया में बच्चा अपने परिवेश से जुड़ता है। उसे प्रकृति के साथ रहने, अपने शरीर को सक्रिय रखने और दूसरों के साथ संबंध बनाने के अवसर मिलते हैं।

यदि हम हर अव्यवस्था से बचाने के नाम पर बच्चों को अनुभवों से दूर कर देंगे, तो उनके विकास का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा अधूरा रह जाएगा।

बचपन को बचाने की जिम्मेदारी केवल माता पिता की नहीं है। विद्यालय, समाज, मीडिया और हमारी सामाजिक व्यवस्था भी इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विद्यालयों में खेल और कला को अतिरिक्त गतिविधि मानकर सीमित नहीं किया जाना चाहिए। बच्चों को प्रश्न पूछने, अपनी बात रखने और रचनात्मक प्रयोग करने के पर्याप्त अवसर मिलने चाहिए। परिवारों में ऐसा वातावरण होना चाहिए, जहाँ बच्चा अपनी गलती स्वीकार करने से डरे नहीं और अपनी परेशानी बताते हुए स्वयं को अकेला न महसूस करे। समाज को भी ऐसे सुरक्षित सार्वजनिक स्थानों के निर्माण पर ध्यान देना चाहिए, जहाँ बच्चे स्वतंत्र रूप से खेल सकें और प्रकृति के निकट रह सकें।

इसके साथ ही हमें बच्चों को संस्कार देने के अर्थ पर भी विचार करना होगा। संस्कार केवल निर्देशों और उपदेशों से नहीं आते; वे हमारे आचरण से विकसित होते हैं। हम यदि बच्चों से संवाद करने के बजाय उन्हें चुप रहने को कहेंगे, उनकी बात सुने बिना निर्णय सुनाएँगे या अपनी सुविधा के लिए उन्हें लगातार मोबाइल थमाते रहेंगे, तो केवल समझाने से अपेक्षित परिणाम नहीं मिलेंगे। बच्चों को समय देना, उनकी बात ध्यान से सुनना, उनके साथ खेलना, पुस्तकें पढ़ना और घर के छोटे छोटे कार्यों में उन्हें सहभागी बनाना भी संस्कारों की प्रक्रिया है। स्नेह का अर्थ उनकी हर इच्छा पूरी करना नहीं, बल्कि उनकी आवश्यकताओं को समझते हुए उचित सीमाएँ निर्धारित करना है।

यह भी जरूरी है कि हम बचपन को केवल अपनी पुरानी स्मृतियों के आधार पर न आँकें। हर पीढ़ी का परिवेश अलग होता है। आज के बच्चों के सामने नई चुनौतियाँ हैं और उनके अनुभव भी अलग हैं। हमें उनके संसार को समझना होगा, न कि केवल अपने समय को श्रेष्ठ बताकर उनकी दुनिया को खारिज कर देना होगा। परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाते हुए हम उन्हें वह सब दे सकते हैं, जो हर युग में बचपन की मूल आवश्यकता रहा है, सुरक्षा, स्नेह, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, जिज्ञासा और अपनापन।

सबसे पहले हमें यह स्वीकार करना होगा कि बचपन को बचाने के लिए बच्चों को बदलने से अधिक अपनी प्राथमिकताओं पर विचार करने की जरूरत है। क्या हमारी व्यस्तता इतनी बढ़ गई है कि बच्चों की बातें हमें बाधा लगने लगी हैं? क्या हम उनकी उपलब्धियों को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना बैठे हैं? क्या हम उन्हें जीवन जीना सिखाने के बजाय केवल सफल होना सिखा रहे हैं? इन प्रश्नों के उत्तर आसान नहीं हैं, लेकिन इन पर विचार किए बिना समाधान भी संभव नहीं है।

मैं मानती हूँ कि बच्चे का बचपन किसी बंद मुट्ठी में कैद रखने की वस्तु नहीं, बल्कि खुली हथेली पर खिलने वाला फूल है। उसे अपनी गति से विकसित होने के लिए समय, स्थान और स्नेह चाहिए। उसे गिरने की स्वतंत्रता चाहिए, ताकि वह उठना सीख सके; प्रश्न पूछने का अवसर चाहिए, ताकि उसकी सोच विकसित हो सके; और सपने देखने की छूट चाहिए, ताकि वह अपनी संभावनाओं को पहचान सके। हमारी भूमिका उसके हर कदम को नियंत्रित करना नहीं, बल्कि उसके रास्ते को सुरक्षित और सार्थक बनाने में सहयोग देना है।

बचपन सचमुच मुट्ठी से फिसल रहा है, लेकिन यह नियति नहीं है। हम चाहें तो बच्चों की दिनचर्या में खेल के लिए समय निकाल सकते हैं, भोजन की मेज पर मोबाइल से दूरी बनाकर संवाद को स्थान दे सकते हैं, सप्ताहांत में प्रकृति के बीच जा सकते हैं और उनकी छोटी छोटी खुशियों में सहभागी बन सकते हैं। हम उन्हें यह विश्वास दे सकते हैं कि उनका महत्त्व केवल उनके अंकों, पुरस्कारों या उपलब्धियों से निर्धारित नहीं होता। वे जैसे हैं, वैसे ही प्रेम और सम्मान के अधिकारी हैं।

समय की सबसे बड़ी विडंबना यही है कि हम बच्चों के भविष्य को सँवारने में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि उनका वर्तमान हमारी आँखों के सामने से गुजर जाता है। जिस बचपन को हम सुरक्षित रखने का दावा करते हैं, उसी को अनजाने में अपनी अपेक्षाओं, व्यस्तताओं और सुविधाओं की भेंट चढ़ा देते हैं। जबकि बचपन जीवन का वह अध्याय है, जिसे दोबारा लिखने का अवसर नहीं मिलता।

आइए, हम बच्चों को केवल बड़ा होने की तैयारी न कराएँ, उन्हें बचपन जीने का अवसर भी दें। उनकी हँसी को घर की सबसे मधुर ध्वनि बनने दें, उनकी जिज्ञासाओं को विचारों के नए द्वार खोलने दें और उनकी कल्पनाओं को उड़ान भरने दें। क्योंकि आज जिन हाथों में हम बचपन की उँगली थमाए हुए हैं, कल उन्हीं हाथों में भविष्य की बागडोर होगी।

यदि हम चाहते हैं कि आने वाली पीढ़ी संवेदनशील, रचनात्मक और मानवीय बने, तो हमें उसके बचपन की रक्षा आज ही करनी होगी।

बचपन को मुट्ठी में बाँधकर नहीं, प्रेम, विश्वास और स्वतंत्रता के खुले आकाश में खिलाकर बचाया जा सकता है। यही हमारी जिम्मेदारी है, यही समय की माँग है और यही आने वाली पीढ़ी के प्रति हमारा सबसे सुंदर दायित्व है।

डॉ. प्रीति समकित सुराना

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
रविवार, 18 अक्टूबर 2026

जुड़ गया है तुमसे बन्धन

जुड़ गया है तुमसे बन्धन एक नया ऐसा
जैसे जुड़ा नाता भोर संग किरण
एक मीठी सी चाहत उठी है दिल में
जैसे लाल रंग के फूल से महका हो चमन

इस सुर्ख खुशबू से न जाने कब,
कैसे और कहाँ तुम जुड़ गए।
न जाने कब तुम मेरी लाल बिंदी में
मेरा भाग्य बन कर समा गये।

न जाने कब तुमने मेरी मांग के
सिंदूर में अपना घर ढूँढ लिया।
न जाने कब हाथों की लकीरों में
मेहंदी बन कर बस गये।
न जाने कब तुमने मेरे पाँव के महावर को
अपने आँगन की रंगोली बना लिया
न जाने कब....

मेरी सुर्ख चूड़ियों की खनखन में
तुम्हारे नाम का संगीत गूँजता है
मेरी लाल चूनर "तुम" बनकर
हर बुरी बला को सोख लेती है

इस रंग से जुड़ा मेरा नाता
मुझे मुझसे चुरा कर
तुम्हे सौंप देता है
और मेरी हर तलाश,
मेरे होने का मकसद,
मेरी हर एक ख़्वाहिश और ख्वाब को
एक मुकाम से जोड़ देता है।
मेरे लिए इस रंग का अर्थ ही "तुम" हो
जाते हो

हाँ होने लगा है,
या शायद गहराई से हो चुका है
जुड़ चुका है
रच बस गया है मुझमें
तुम सँग लाल "सुर्ख इश्क़" ❤️

महक छाबड़ा

आँचल में ब्रह्मांड

बिंदु-बिंदु जोड़कर जिसने,
सृष्टि सी रची है माँ ने,
रंगों की इस दुनिया में,
ममता की वर्षा की है माँ ने।

एक आँचल में दो दुनियाँ,
एक में नींद, एक में आस,
झुकी पलकों में वात्सल्य,
जैसे बरसे चाँदनी का अहसास।

गोद नहीं, ये तो लगता है,
छोटा सा ब्रह्मांड है,
हरे, नारंगी, बैंगनी रंगों का,
इंद्रधनुषी पाखंड है।

तारों जैसे बिंदुओं के बीच,
माँ की मूरत दमक रही,
दो नन्ही कलियों को लेकर,
खुद में ही सिमट रही।

सबसे बड़ा सत्य यही है,
माँ से बड़ा कोई दूजा नहीं,
उसके आँचल से बढ़कर,
जग में कोई पूजा नहीं।

मंजू सरावगी

यह किस महाजन की बही

जो तुम कहो
बस वो सही
यह किस महाजन की बही
जो कर्ज ही ढोते रहें
हम उम्र भर

किस कर्ज में
गिरवी रखी
किसने हमारी चेतना
हमने चुकाया मूल
फिर भी सूद
चढ़ता सौ गुना

किस जन्म से
इस जन्म तक
किसने किया, है आकलन
प्रारब्ध को रोते रहें
हम उम्र भर

प्रतिबन्ध दे
नारीत्व का अपमान
अब तक कर रहे
जब तोड़ती
वह वर्जना
उत्कर्ष से तुम डर रहे

सत्कर्म के
सद्धर्म के
क्यों घाव ले मन-मर्म के
आखेट ही होते रहें
हम उम्र भर

प्रतिबन्ध
पीड़ित पक्ष पर
प्रतिवाद का अवसर नहीं
वह संहिता क्या
न्याय का भी हो जहाँ पर
स्वर नहीं

अभियुक्त का
भय-मुक्त का
सब साधनों से युक्त का
प्रतिकार अब बोते रहें
हम उम्र भर .

ख़ुशी

सुबह की पहली सोच हो तुम,
रात का सुकून हो तुम,
मेरे दिल की हर धड़कन में,
बसता हुआ जुनून हो तुम।

भोर की सुनहरी धूप हो तुम,
दिन का हसीन ख़्वाब हो तुम,
मेरे लबों की मुस्कान हो तुम,
मेरे दिल का जवाब हो तुम।

तेरी हँसी से खिलते हैं दिन,
तेरी यादों से रातें हैं,
तुमसे ही रौशन मेरी दुनिया,
तुमसे ही दिल की बातें हैं।

मेरी हर दुआ में तुम हो,
मेरी हर चाह में तुम हो,
मैं कैसे लफ़्ज़ों में लिख दूँ,
मेरी ज़िंदगी की पनाह हो तुम। ❤️

मेरी सुबह, मेरी शाम हो तुम,
मेरे दिल का अरमान हो तुम,
दुनिया चाहे कुछ भी समझे,
मेरी मोहब्बत, मेरा जहान हो तुम।

खुशी झा

जगदीश पंकज

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
सोमवार, 19 अक्टूबर 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

हम रहेंगे नहीं

मै झुकता रहा अब झुकेंगे नही
मैं बहुत कह चुका अब कहेंगे नहीं
आज तक तुम मुझको समझ न सकी
जब समझोगी तुम हम रहेंगे नहीं।

तेरी यादों की घेरे से निकला अभी
पागल दीवाना मुझे कहते सभी
तुम लिखती रहो स्वयं पढ़ती रहो
तुम कुछ भी लिखो हम पढ़ेंगे नहीं।

जब तुमसे मिला भावना में बहा
कटु शब्दों को भी मैंने हंसकर सहा
तुम नफरत करो जी भरकर करो
हम तुमसे शिकायत करेंगे नहीं।

गम का बादल तुम पर ना छाए
कभी प्रतिभा को तेरी सराहे सभी
सौगात मौत का मेरी तुमको मिले
बददुआ भूलकर तुमको देंगे नहीं

प्रमोद नारायण मिश्र

शुद्ध एवं सात्विक भोजन का अनुभव...

आज घर पर बहुत ही सादा, शुद्ध और सात्विक खाना बना।
चावल, दाल, आलू का भुजिया, आलू का चोखा, टमाटर की चटनी और बैंगन का भरता।

जब प्लेट में सब कुछ एक साथ रखा, तो मन को एक अजीब सी शांति महसूस हुई। कोई ज्यादा मसाले नहीं, कोई तेज गंध नहीं... बस बेहतरीन स्वाद और सादगी। दाल की हल्की खुशबू, आलू के चोखे का नरम स्वाद, बैंगन के भरते की स्मोकी खुशबू और टमाटर की चटनी का हल्का खट्टापन... सब कुछ मिलकर एक बहुत ही संतुलित और संतोषजनक भोजन बन गया।

खाना खाते समय एक बात बार-बार ध्यान में आई। सच में सात्विक भोजन सिर्फ पेट नहीं भरता, मन को भी हल्का और शांत कर देता है। खाने के बाद कोई भारीपन नहीं, कोई सुस्ती नहीं... बस एक हल्की सी तृप्ति और कृतज्ञता का भाव।
कभी-कभी लगता है कि हम स्वाद के चक्कर में बहुत कुछ जटिल बना लेते हैं। जबकि असल स्वाद तो इन साधारण चीजों में ही छिपा होता है। चावल-दाल और ये सब्जियाँ... ये तो सदियों से हमारे घरों का आधार रहे हैं।

आज का यह सादा भोजन याद दिला गया कि शुद्धता और सादगी में ही असली पोषण है।

राहुल आर्यन

अफ़साने बहुत हैं .....

चलो ये तो पता चला मुझ में, तहखाने बहुत हैं।
ख़ुदा हूँ मैं,मन की मस्जिद का, बुतखाने बहुत हैं।

ग़ैर मिलते हैं,पर बताते नहीं, प्यालों का पता!
पैर हिलते हैं तो ही लगता है, मयखाने बहुत हैं।

जहर चढ़ता है या उतरता,दर पे लगी भीड़ देखो,
हमारी ही पुड़िया करामाती है,दवाखाने बहुत हैं।

ग़म,गलीचों को भी सताता है,मगर कहे कौन?
पायदानों को जूता बताता हैं,दरीखाने बहुत हैं।

शब्दों को पढ़कर तो तुम, मुझे बंदर कह दोगे,
मस्त कलंदर हूँ उस्तादों का,यतीमखाने बहुत है।

रोज प्रेम की पाती ही बुनू,कसक के क्रोशिए से
बनता हूँ भावों को डाकिया,डाकखाने बहुत है।

मण्डेला की शायरी में खूबसूरती का है अकाल!
माल फिर भी बिकता ही है, कारखाने बहुत हैं।

सत्येन्द्र मण्डेला

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
मंगलवार, 20 अक्टूबर 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

"क्या रावणदहन जरुरी है,..?"

जानती हूं थोड़ा अजीब सा सवाल है ये कि क्या **रावण दहन जरुरी है??** पर सच कहूं जब से दशहरा की कहानी समझ में आने लगी तब से आज तक मैं इस सवाल का बोझ मन में लिए जी रही हूं। मेरे सवाल पूछने की वजह का दायरा बढ़ता गया पर व्यवस्थित जवाब जो इस सवाल को समूल सोदाहरण हल कर दे अभी तक नहीं मिला। पहले यही सवाल बालसुलभ जिज्ञासा थी पर अब आस्था की दृष्टि से, संस्कृति की दृष्टि से, मानव व्यवहार की दृष्टि से और आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से यही सवाल बार बार उठता है मेरे मन में कि क्या रावण दहन जरुरी है????

*** पहले ये सपष्टीकरण की विचारों की अभिव्यक्ति के अधिकार के चलते मैं सिर्फ अपनी सोच आप सबके सामने रख रही हूं किसी से भी सहमति का आग्रह या अपनी सोच लादने की नीयत नहीं है। मेरा इरादा किसी भी धर्म, व्यक्ति,जाति या विचारधारा को ठेस पहुंचाना नहीं है फिर भी किसी का मन आहत हो तो करबद्ध अग्रिम क्षमायाचना करती हूं। ***

"**आस्था**" ये है कि मर्यादापुरुषोत्तम विष्णुअवतार "**राम**" द्वारा शिवभक्त महाज्ञानी "**रावण**" का वध बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है जिसे "दशहरा" के रुप में मनाया जाता है। आस्था कहती है जगत के रचयिता "**ब्रम्हा-विष्णु-महेश**" है। **रामायण** और **महाभारत** जैसी कथाओं को ईश्वर की लीला माना जाता है जो देश- काल और परिस्थिति के अनरूप मानव जाति को सही मार्गदर्शन के लिये और व्यभिचार और अत्याचार से सृष्टि के विनाश को रोकने के लिए रची गई थी।

इस कहानी ने बुराई पर अच्छाई की जीत की शिक्षा तो दी पर एक ही गुनाह की सज़ा सदियों तक देना सही है,..? प्रतीकात्मक ही सही हम बार बार रावण का दहन करने का अधिकार रखते हैं ?? क्या आज के युग में राम सा मर्यादा पुरुषोत्तम कोई है जो रावण के पुतले का भी दहन करने की पात्रता रखता हो ??

अब बात करें रावण जैसे भाई की?? सबको ये तो याद है की रावण ने सीता का हरण किया था पर क्यूं किया ?? सूर्पनखा की नाक कटने से आवेश में आकर किया था रावण ने वो कृत्य। यानि अपनी बहन की मानहानि के फलस्वरूप उपजा आक्रोश था जिसने उसे ये कुकर्म करने के लिए प्रेरित किया था ? पर ये उसकी अच्छाई ही तो थी कि उसके बाद भी उसने सीता के साथ कोई ऐसा कृत्य नहीं किया जिसके लिए हर बार ऐसी सज़ा पाने का अधिकारी हो। अपनी बहन के मान के बदले बदला लेना उसकी राक्षसी प्रवृति थी पर हम तो मानव हैं ??

वो भी ऐसे मानव जिसे बचपन में जन्मघुट्टी के साथ कुछ संस्कार भी पिलाये जाते हैं जिनमे से एक सीख जो बचपन से मुझे भी दी गई थी कि **"पाप से घृणा करो पापी से नहीं"** पर सदियों से रावण दहन के रूप में हम उसे पापी मानकर उसकी हत्या का पाप करते आ रहे हैं,.. ?? क्या यही हमारी संस्कृति है,.. ?? यही मानवीयता है,.. ??

आज हम सभी को कटघरे में खड़े करके पूछा जाए तो प्रमाणित हो जाएगा कि आज के युग में राम तो है ही नहीं,.. जिसने मर्यादा का पालन किया हो। पर अपनी बहन से प्रेम रखने वाला, शिवभक्त और महाज्ञानी रावण जैसा दानव कहलाने योग्य एक भी मानव मैं अब तक नहीं देखा।

आज के युग में जब मानव के कृत्य दानव से भी घिनौने हो गए हैं तब ये प्रतीकात्मक दहन की परंपरा का औचित्य नहीं समझ पाई मैं। व्यभिचार,अनाचार और भष्टाचार जैसे विषाक्त आचारों का दहन करना छोड़कर रावण का पुतला बनाकर जलाया जाना कहां तक सही है ?

एक तरफ हम दिनबदिन बढ़ती महंगाई का रोना रोते हैं,..दूसरी तरफ लाखो रुपए रावण बनाकर उसको जलने में नष्ट कर देते हैं। एक तरफ हम प्रदूषण से पृथ्वी को होने वाले संकटों के प्रचार प्रसार में पैसा बर्बाद करते हैं दूसरी तरफ बारुदी परम्पराओं का निर्वाह इतने जोर शोर से करते हैं कि जल थल वायु ध्वनि और जन धन को प्रदूषित करने में कोई कसर बाकी न रहे।

क्या आपको नहीं लगता की अगर आस्था के चलते परम्परा निभानी भी हो तो इतना प्रदूषण और धन का नाश करने की बजाए ऐसे त्योहारों को कम से कम खर्च में मनाना चाहिए और त्योहारों का जो वास्तविक सन्देश का निर्वाह करना चाहिए,..यानि **आज समय की मांग यही है कि सचमुच हमें अपने मानसिक विकारों और समाज में फ़ैल रही गंदगी का दहन या हनन करके अपनी संस्कृति को जीवित रखना चाहिए ना कि सिर्फ दिखावे के लिए या परम्पराओं को निभाने के लिए,..।**

दशहरा की शुभकामनाओं के साथ मेरे सवालों के जवाब की अपेक्षा करती हूं।

"समय की मांग"

चारो ओर जो फैल रहा है व्यभिचार का रोग अभी,
नारी वहम की बली चढे और तन मन से जाए यूं छली,.

सहभागी हर सुख-दुख में और सहगामिनी हर पल बनी,
उसी सीता की ली अग्निपरीक्षा और परित्यक्त भी हुई वही,

कंहा मिलेगा अब नर ऐसा,जो रावण ही बन जाए,
राम कई अब भी मिल जाएंगे पर रावण सा कोई बचा नही,..

प्रभु भक्ति ऐसी अनुपम थी,नस बनी वीना का तार,
ज्ञान का भंडार भरा था पर अहम् ज्ञान पर किया नही,..

सत्ता और जान लुटा दी जिसने बहन की कटी नाक पर,
पर स्त्री को हरण किया पर छल-बल से वरण किया नही,..

राम सा पति न भी मिले पर भाई रावण सा ही मिले,
नर राम नही रावण बन जाए, है आज समय की मांग यही,....।

डॉ. प्रीति समकित सुराना

राम नाम साकार करे

अहंकार रूपी रावण का हम दहन करे|
बस राम नाम की जय-जयकार ही नहीं..
अब राम नाम साकार करे|

कलयुग का एक ही आधार|
राममय हो जाए जो संसार|
अंतर्मन पर जीत हासिल करें|
राम नाम की जय जयकार नही..
अब राम नाम साकार करे|

जय रघुनंदन जय सिया राम
जय रघुनंदन जय सिया राम

नवनीता कटकवार शुक्ला

पुतला जलाकर प्रसन्न हो रहे

रावण को तुम जला के प्रसन्न हो रहे
खुद को ही यूँ छिपाके प्रसन्न हो रहे
रावण की आड में देखो रावण हैं खडे
पुतला जला जला के बस प्रसन्न हो रहे।
तुमसे भला था रावण बस एक रूप था
चेहरे पे चेहरा लगा के तुम प्रसन्न हो रहे।
सीता का किया हरण, पर छुआ तक नहीं
नन्ही कली कुचल कर तुम प्रसन्न हो रहे
था ज्ञानी, ध्यानी, प्रतापी वो महात्मा बडा
मूरख हो तुम जो उसको जला के प्रसन्न हो रहे
एक ग़लती पे रावण का नाश हो गया
अपने पतन की सोचो क्या अब प्रसन्न हो रहे??

डॉ. आशु जैन

कैसे वंदन करें तुम्हारा राम

कैसे वंदन करें तुम्हारा राम ,आज हम,
कैसे हम उल्लास विजय का पर्व मनाएं?
आज देश के घर-आँगन में, भटक रही कितनी सीताएं,
मर्यादा के बंध टूटते,टूट गईं सारी सीमाएं
कैसे अर्चन करें तुम्हारा राम आज हम,
जब सिसक रहीं घर घर में कितनी अभिलाषाएं.
कैसे हम उल्लास ,विजय का पर्व मनाएं?
रावण की प्रतिमूर्ति दहन कर क्या पाते हम?
क्या सचमुच रावण जलता है अनय कलुष का?
अपमानित है आज अहिंसा जिस धरती पर,
खंडित है अस्तित्व वहां आदर्श मनुज का.
कैसे वंदन करें तुम्हारा राम आज हम ,
जब बनी सिया की सेज,चिता की ज्वलित शिखाएं.
कैसे हम उल्लास विजय का पर्व मनाएं?.
अब भी जीवित है रावण आतंक, अनय का,
हर घर में पलती अब भी लंका नगरी,
सीता सी दे रही परिक्षा आज बेटियाँ,
मुस्काती अत्याचारों की काल निशिचरी
कैसे पूजन करें तुम्हारा राम आज हम,
जब सत्य हो रहा आज पराजित,दूषित हैं क्यों वेद ऋचाएं
कैसे हम उल्लास विजय का पर्व मनाएं?

पद्मा मिश्रा

दशहरा

आता है प्रतिवर्ष दशहरा
रावण का पुतला जल जाता
ढोल नगाड़े बजा-बजाकर
खुशियों से तन मन हर्षाता।
क्या मन का रावण जलता?
छल, प्रपंच, पाखंड से,
साधु यति का भेष बनाकर
सती नारी को अब छलता।
राम ने एक रावण को मारा,
लंका में दुष्टों को संघारा
भाई लक्ष्मण सीता के संग
मर्यादा का धर्म निभाया।

बिन पद त्राण वनों मेंभटके
चौदह वर्षों में अयोध्या लौटे
हर्षित हुए सभी नर नारी
विजय महोत्सव की तैयारी।
घर आंगन में दीप जल रहे
द्वार द्वार बन्दनवार सज रहे।
युग बदला, सोच बदल गई
सत्य धर्म की राह बिगड़ गई
करुणा, क्षमा, प्रेम के बदले
अहंकार का नशा चढ़ रहा
कैसा यह त्यौहार दशहरा?

चंद्रकांता अग्रवाल

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
गुरुवार, 22 अक्टूबर 2026

'बाल विभा @2.0' में नौ बाल साहित्यकार सम्मानित

आरिणी चैरिटेबल फाउंडेशन का गरिमामय आयोजन, पाँच साहित्यिक विभूतियों की स्मृति में प्रदान किए गए 'आरिणी बाल साहित्य साधना सम्मान 2026'

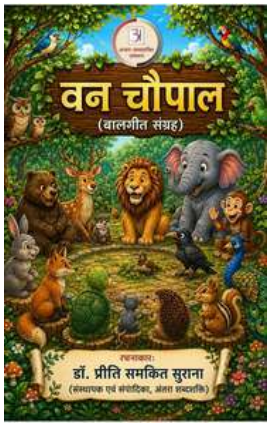

भोपाल, 21 अक्टूबर। आरिणी चैरिटेबल फाउंडेशन, भोपाल द्वारा दुष्यंत कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय, शिवाजी नगर में **'बाल विभा @2.0'** के अंतर्गत **'आरिणी बाल साहित्य साधना सम्मान 2026'**, पुस्तक विमोचन एवं बाल काव्यपाठ समारोह का आयोजन किया गया। साहित्य, संस्कार और बाल सृजनशीलता को समर्पित इस समारोह में पाँच साहित्यिक विभूतियों की स्मृति में बाल साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले नौ रचनाकारों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी के निदेशक एवं प्रख्यात **बाल साहित्यकार डॉ. विकास दवे** ने की। मुख्य अतिथि वरिष्ठ बाल साहित्यकार **श्री रजनीकांत शुक्ला**, गाजियाबाद तथा विशिष्ट अतिथि पूर्व कुलपति **डॉ. अखिलेश कुमार पाण्डेय** एवं बाल साहित्य शोध केंद्र, भोपाल के निदेशक **श्री महेश सक्सेना** रहे।

दीप प्रज्ज्वलन, सरस्वती वंदना एवं अतिथि सत्कार

समारोह का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। तान्या शर्मा ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। इसके पश्चात अतिथियों का स्वागत एवं सत्कार किया गया। कार्यक्रम में साहित्यकारों, बाल साहित्य के अध्येताओं तथा विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े रचनाकारों की उपस्थिति ने आयोजन को साहित्यिक गरिमा प्रदान की।

स्वागत भाषण में बाल साहित्य की महत्ता रेखांकित

संस्था की अध्यक्ष एवं संस्थापक डॉ. मीनू पांडेय 'नयन' ने स्वागत वक्तव्य में कहा कि बाल साहित्य बच्चों की कल्पनाशीलता, संवेदनशीलता, संस्कार एवं व्यक्तित्व निर्माण की आधारभूमि है। उन्होंने बाल साहित्य के माध्यम से नई पीढ़ी को साहित्य, संस्कृति, प्रकृति और जीवन-मूल्यों से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। वर्ष 2018 से साहित्य, शिक्षा, संस्कृति, कला एवं समाजसेवा के क्षेत्र में सक्रिय आरिणी चैरिटेबल फाउंडेशन ने वर्ष 2025 में 'बाल विभा' की शुरुआत की थी। इसका दूसरा संस्करण वरिष्ठ साहित्यकारों के सम्मान, नवोदित प्रतिभाओं के प्रोत्साहन और नई पीढ़ी को साहित्य से जोड़ने के संकल्प को समर्पित रहा।

पाँच स्मृति सम्मानों से नौ साहित्यकार सम्मानित

समारोह का प्रमुख आकर्षण **'आरिणी बाल साहित्य साधना सम्मान 2026'** की सम्मान श्रृंखला रही। पाँच साहित्यिक विभूतियों की स्मृति में प्रदान किए गए इन सम्मानों के अंतर्गत नौ साहित्यकारों को उनकी साहित्यिक साधना एवं कृतियों के लिए सम्मानित किया गया।

1) **पं. जगदीश प्रसाद पाण्डेय** स्मृति सम्मान (समग्र अवदान) ग्वालियर के वरिष्ठ साहित्यकार **ऋषि मोहन श्रीवास्तव** को प्रदान किया गया।

2) **श्रीमती तारा पाण्डेय** स्मृति सम्मान (गद्य) **इंदिरा त्रिवेदी** को उनकी कृति 'गूँगी गुड़िया' तथा **सुधा दुबे** को 'बाल राम कथा' के लिए संयुक्त रूप से दिया गया।

3) **पं. मुन्नीलाल मिश्रा** स्मृति सम्मान (पद्य) **किरीट गोस्वामी**, जामनगर को 'हाथी राजा स्कूल चले' तथा **डॉ. अनीता सक्सेना**, भोपाल को 'प्रकृति के अनुपम रंग बादल बारिश पतंग के संग' के लिए संयुक्त रूप से प्रदान किया गया।

4) **श्रीमती कस्तूरी बाई मिश्रा** स्मृति सम्मान (बाल साहित्य की प्रथम कृति) **डॉ. प्रीति समकित सुराना**, वारासिवनी को उनकी कृति 'वन चौपाल' तथा **माधुरी व्यास** 'नवपमा', इंदौर को 'एक पाती नाम तुम्हारे' के लिए संयुक्त रूप से दिया गया।

5) **श्री उमेश चंद्र मिश्रा** स्मृति सम्मान (युवा रचनाकार) **वत्सला चौबे**, भोपाल को उनकी कृति 'वत्सला @2211' तथा **मांडवी मिश्रा**, रीवा को उनकी कृति 'वन चौपाल' के लिए प्रदान किया गया।

सभी सम्मानित साहित्यकारों को अतिथियों द्वारा स्मृति-चिह्न, शॉल, श्रीफल एवं सम्मान राशि भेंट की गई।

अतिथियों के उद्बोधन में बाल साहित्य, संस्कार और संस्कृति पर विचार

समारोह की अध्यक्षता करते हुए डॉ. विकास दवे ने आरिणी चैरिटेबल फाउंडेशन के नवाचारपूर्ण प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि संस्था साहित्यकारों एवं नवोदित प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने की दिशा में विशिष्ट कार्य कर रही है। उन्होंने सभी साहित्यकारों को अपना परिजन बताते हुए कहा कि साहित्यकारों के लिए सम्मान संबल और प्रेरणा का कार्य करता है।

मुख्य अतिथि श्री रजनीकांत शुक्ला ने संस्था, संस्थापक डॉ. मीनू पांडेय 'नयन' एवं सभी सम्मानित साहित्यकारों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि बच्चों के लिए लिखना बच्चों का काम नहीं, बल्कि इसके लिए मन को बच्चों जैसा निर्मल, सहज और निष्कपट बनाना पड़ता है। उन्होंने 'स्वान्तःसुखाय' की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए बाल साहित्य की महत्ता रेखांकित की तथा मध्यप्रदेश के साहित्यकारों की विपुल साहित्यिक सृजनशीलता की सराहना की।

विशिष्ट अतिथि डॉ. अखिलेश कुमार पाण्डेय ने प्रकृति और संस्कृति के बीच संतुलन तथा समाज में सांस्कृतिक मूल्यों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने संयुक्त परिवार के महत्त्व को रेखांकित करते हुए कहा कि गर्भावस्था के दौरान सुयोग्य साहित्य एवं सकारात्मक विचारों का प्रभाव बच्चे के विकास पर पड़ता है। उन्होंने मातृत्व को प्रकृति का वरदान बताते हुए नई पीढ़ी से जीवन के इस महत्त्वपूर्ण पक्ष को सहजता से स्वीकार करने और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को आत्मसात करने का आह्वान किया।

विशिष्ट अतिथि श्री महेश सक्सेना ने 'चैरिटी बिगिन्स एट होम' का उल्लेख करते हुए कहा कि सेवा, संस्कार और सामाजिक दायित्वों की शुरुआत परिवार से होती है। उन्होंने संस्थापक डॉ. मीनू पांडेय 'नयन' के संघर्षशील एवं बहुआयामी व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए उनकी रचनाओं, विशेषकर 'आधी रोटी पूरा सुख', का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक साहित्य की अपनी माँग होती है। उस माँग को समझकर समसामयिक विषयों, बालमन की जिज्ञासाओं और कल्पनाओं को अभिव्यक्ति देने वाला रचनाकार ही प्रभावी साहित्य का सृजन करता है।

डॉ. मीनू पांडेय 'नयन' की 'जंगल की पाठशाला' का विमोचन

समारोह में डॉ. मीनू पांडेय 'नयन' की बाल चित्रकथा पुस्तक 'जंगल की पाठशाला' का विमोचन किया गया। बाल साहित्य के माध्यम से बच्चों को रोचक कथाओं, कल्पनाशीलता और जीवनोपयोगी संदेशों से जोड़ने की दिशा में इस कृति को प्रस्तुत किया गया। डॉ. मीनू पांडेय 'नयन' का साहित्य, शिक्षा, संस्कृति और समाजसेवा के क्षेत्रों में सक्रिय योगदान समारोह के केंद्र में रहा।

स्तक की समीक्षा साहित्यकार विनीता राहुरीकर ने प्रस्तुत की। विमोचन एवं पुस्तक चर्चा के दौरान उपस्थित साहित्यकारों ने बाल साहित्य की उपयोगिता तथा बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में उसकी भूमिका पर विचार व्यक्त किए।

डॉ. प्रीति समकित सुराना की 'वन चौपाल' का विमोचन

समारोह में डॉ. प्रीति समकित सुराना की बाल साहित्य कृति 'वन चौपाल' का भी विमोचन किया गया। बाल साहित्य की प्रथम कृति के लिए उन्हें 'श्रीमती कस्तूरी बाई मिश्रा स्मृति सम्मान 2026' से सम्मानित किया गया।

'वन चौपाल' के माध्यम से बालमन, प्रकृति, पर्यावरण, जीवन-मूल्यों और सामूहिकता जैसे विषयों को बच्चों तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है। इस अवसर पर अतिथियों ने 'वन चौपाल' के साथ 'अन्तरा शब्दशक्ति' का भी विशेष रूप से उल्लेख किया। बाल साहित्य के सृजन, प्रकाशन और साहित्यकारों को मंच उपलब्ध कराने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों की चर्चा ने इस अवसर को डॉ. प्रीति समकित सुराना के लिए विशेष रूप से स्मरणीय बनाया।

बाल काव्यपाठ में रचनाकारों ने प्रस्तुत कीं बाल रचनाएँ

डॉ. मंजू मिश्रा के संचालन में आयोजित बाल काव्यपाठ में मधुलता शर्मा, कमल चंद्रा, रानी सुमिता, उषा सोनी, डॉ. नीलू शुक्ला 'समीर', मधूलिका श्रीवास्तव, आशा जाकड़, वर्षा वर्षिता श्रीवास्तव, दिशा मिश्रा, गोकुल सोनी, नीना सिंह सोलंकी, डॉ. साधना शुक्ला, हरिओम श्रीवास्तव, मनोज जैन 'मधुर', मधुलिका सक्सेना, मृदुल त्यागी, लीना वाजपेयी एवं अशोक व्यास ने अपनी बाल रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

फाउंडेशन की आठ वर्षों की सृजन एवं सेवा यात्रा

संस्था की सचिव प्रेक्षा सक्सेना ने फाउंडेशन की आठ वर्षों की सृजन, सेवा एवं नवाचार यात्रा का परिचय प्रस्तुत किया। उन्होंने संस्था की गतिविधियों तथा साहित्य, शिक्षा, संस्कृति, कला एवं समाजसेवा के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ साहित्यकार श्री सत्यदेव सोनी 'सत्य' ने किया। सरस्वती वंदना तान्या शर्मा ने प्रस्तुत की तथा शेफालिका श्रीवास्तव ने आभार व्यक्त किया।

सहयोग और स्नेह के लिए डॉ. प्रीति समकित सुराना ने व्यक्त किया आभार

'वन चौपाल' के लिए 'आरिणी बाल साहित्य साधना सम्मान 2026' प्राप्त होने पर डॉ. प्रीति समकित सुराना ने आरिणी चैरिटेबल फाउंडेशन की अध्यक्ष एवं संस्थापक डॉ. मीनू पांडेय 'नयन' तथा समारोह में उपस्थित सभी अतिथियों, साहित्यकारों और आयोजकों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह सम्मान उनके लिए गौरव के साथ-साथ बाल साहित्य के क्षेत्र में और अधिक गंभीरता, संवेदनशीलता एवं समर्पण के साथ सृजन करने की प्रेरणा है। उन्होंने विशेष रूप से गुलशन जी, समकित जी, मनोज जी और शैलेश भाई के सहयोग एवं संबल के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि अपनों का साथ कठिन परिस्थितियों में हौसला देता है और महत्त्वपूर्ण अवसरों को स्मरणीय बनाने में विशेष भूमिका निभाता है।

डॉ. प्रीति समकित सुराना ने पुनः डॉ. मीनू पांडेय 'नयन', सभी अतिथियों, सम्मानित साहित्यकारों, आयोजकों, सहयोगियों एवं शुभचिंतकों के प्रति हृदय से कृतज्ञता व्यक्त की।

डॉ. प्रीति समकित सुराना

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
शुक्रवार, 23 अक्टूबर 2026

चलता चल

जमीं से ऊपर!
हवा में भरोसे की नींव।
नट नहीं वह मनुज!
पर मन विश्वास संग,
दृढ़ता से बढ़ाने लगा कदम!
उस डोर पर।
कह रहा उसका हृदय,
नहीं गिरेगा मानव तू!
क्योंकि डोर के दोनों छोर,
संभाले है तेरा ईश्वर।
स्वयं अपने हाथों से!
जो दे रहा सांसे तुझको,
वही तो तेरे काम संभालता है।
आज भी देगा मंजिल तुझे!
बस तू चलता चल।
अपने लक्ष्य की ओर,
है तेरे साथ और भी बहुत कुछ!
तेरे माता-पिता काआशीष,
संग सभी अपनों की दुआएं।
और सबसे बड़े तेरे सदकर्म!
जिससे ईश्वर मदद करता है।
तो मत होना विचलित,
मनुज तेरी मंजिल है आगे!
जो निहार रही तेरा रास्ता।

सीता गुप्ता

इश्क के दर्द

हम सिर्फ इश्क के दर्द लिखने आए हैं...!!
इश्क करना तो कब का छोड़ आए हैं...!!

अब न किसी की चाहत है,
न किसी से कोई गिला है।
जो था, वो वक्त के साथ
एक अधूरा किस्सा बनकर रह गया है।

कभी किसी के नाम से
धड़कने तेज़ हो जाती थीं,
आज उसी नाम का ज़िक्र भी
बस एक खामोश मुस्कान दे जाता है।

अब हम मोहब्बत नहीं करते,
मोहब्बत की अधूरी दास्तानें लिखते हैं।
क्योंकि जिसे अपना समझा था,
वही हमें सबसे गहरा सबक देकर चला गया।

अब न किसी को पाने की ज़िद है,
न किसी को खोने का डर।
दिल ने इतना सह लिया है
कि अब दर्द भी अपना-सा लगता है।

लोग पूछते हैं—
"इतना दर्द कहाँ से लाते हो?"
हम मुस्कुरा कर कहते हैं—
"कुछ ज़ख्म ऐसे होते हैं, जो उम्रभर अल्फ़ाज़ बनकर जीते हैं।"

अब हमारी कलम में
आँसुओं की स्याही बहती है,
और हर पंक्ति में
एक अधूरी मोहब्बत की कहानी रहती है।

हम सिर्फ इश्क के दर्द लिखने आए हैं...!!
इश्क करना तो कब का छोड़ आए हैं...!!

उमेश गहलोत

डोर पर जीवन

जीवन की डोर परमात्मा के
हाथों सौंप कर निश्चित होते।
चाहे दुख का घोर अंधेरा हो
यह सुख की भोर खिल जाये
कदम नहीं डगमगाते उनके
जो विश्वास के सहारे चल रहे
जीवन पथ के कंटकों को
को प्रेम से चुनना सीखा।
दिन रात हमारी सांसों को
अविराम चलाने वाले प्रभु के
आश्रित लक्ष्य पर बढ़ रहे।
मन से नहीं स्वीकारते हार।
मां के गर्भ में रक्षा किया जो
जन्म के बाद आंचल में दूध
देकर शरीर का पालन किया
माता-पिता तथा गुरु के रूप
में
सुहृद बन आश्रय दिया।
क्या वह कभी गिरने देगा?
आस्था विश्वास की डोर पर
ही हमारा जीवन टिका है।
अदृश्य शक्ति हमारे साथ है
सिर पर उसी का हाथ है।

चंद्रकांता अग्रवाल

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
शनिवार, 24 अक्टूबर 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

जब हम अपनी ही संस्कृति पर हँसने लगें...

सनातन परंपराओं को समझने और सम्मान देने का समय

भारत केवल एक देश नहीं, बल्कि हजारों वर्षों से चली आ रही संस्कृति, परंपराओं, संस्कारों और जीवन-मूल्यों की जीवंत भूमि है। यहाँ पर्व केवल कैलेंडर की तारीखें नहीं होते, बल्कि उनके साथ हमारी भावनाएँ, हमारी आस्थाएँ, हमारी पारिवारिक परंपराएँ और हमारी सांस्कृतिक स्मृतियाँ जुड़ी होती हैं।

आज का समय बदल रहा है। सोशल मीडिया ने विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता को बहुत बढ़ा दिया है। यह अच्छी बात है कि हम प्रश्न पूछते हैं, चर्चा करते हैं और अपनी परंपराओं को नए दृष्टिकोण से देखते हैं। लेकिन चिंता तब होती है, जब हम अपनी ही संस्कृति और अपने ही पर्वों को जाने-समझे बिना उनका मज़ाक बनाने लगते हैं।

सबसे बड़ा प्रश्न यही है—क्या हमें अपनी परंपराओं को समझने का प्रयास नहीं करना चाहिए?

किसी पर्व के पीछे कोई कथा है, कोई ऐतिहासिक प्रसंग है, कोई सामाजिक संदेश है या कोई आध्यात्मिक विचार—उसे समझे बिना केवल उसके बाहरी स्वरूप को देखकर उसका उपहास करना हमारी अपनी जड़ों से दूरी को दर्शाता है।

सनातन परंपरा की विशेषता ही यह रही है कि इसमें चिंतन की परंपरा है। यहाँ प्रश्न पूछने की जगह रही है, विचार-विमर्श की परंपरा रही है और समय के साथ आवश्यक परिवर्तन को स्वीकार करने की क्षमता भी रही है। इसलिए अपनी संस्कृति का सम्मान करने का अर्थ यह नहीं कि हम हर बात को बिना समझे स्वीकार कर लें। सम्मान का अर्थ है—पहले जानना, समझना और फिर अपनी बुद्धि से विचार करना।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने बच्चों को केवल यह न बताएं कि कोई त्योहार कब मनाया जाता है, बल्कि यह भी बताएं कि वह क्यों मनाया जाता है। उन्हें अपनी लोक परंपराओं, पर्वों, कथाओं और संस्कारों से परिचित कराएं। जब अपनी विरासत की सही जानकारी होगी, तब सोशल मीडिया पर चलने वाले किसी मज़ाक या अधूरी जानकारी से उनकी सोच आसानी से प्रभावित नहीं होगी।

दूसरों की संस्कृति का सम्मान करना हमारी भारतीय परंपरा का हिस्सा है। लेकिन दूसरों का सम्मान करने के साथ-साथ अपनी संस्कृति के प्रति सम्मान रखना भी उतना ही आवश्यक है। अपनी जड़ों से जुड़ना किसी के विरुद्ध होना नहीं है।

हमें यह भी समझना होगा कि सोशल मीडिया पर कुछ क्षणों की हँसी के लिए बनाई गई सामग्री बहुत तेजी से फैलती है। उसका प्रभाव केवल उस पोस्ट तक सीमित नहीं रहता। धीरे-धीरे वही मज़ाक हमारी आने वाली पीढ़ी के मन में अपनी ही परंपराओं के प्रति हीन भावना पैदा कर सकता है।

क्या हम अपने बच्चों को अपनी संस्कृति पर गर्व करना सिखा रहे हैं या अपनी ही संस्कृति को हँसी का विषय बनाना?

यह प्रश्न किसी एक व्यक्ति या समुदाय के लिए नहीं, बल्कि हम सभी के लिए है।

हमारी जिम्मेदारी है कि हम अपनी संस्कृति को अंधविश्वास के नाम पर न छोड़ें और न ही बिना समझे उसका मज़ाक बनाएं। जहाँ गलत है, वहाँ सुधार की बात हो; जहाँ परंपरा के पीछे सुंदर विचार है, वहाँ उसे अगली पीढ़ी तक पहुँचाया जाए।

क्योंकि संस्कृति केवल पूजा-पद्धति या त्योहारों का नाम नहीं है। संस्कृति हमारे व्यवहार, हमारे संस्कार, हमारे परिवार, हमारी भाषा, हमारी परंपराओं और हमारे जीवन-मूल्यों में दिखाई देती है।

आज जरूरत किसी से लड़ने की नहीं, बल्कि स्वयं से एक सवाल पूछने की है—
क्या मैं अपनी संस्कृति को वास्तव में जानता/जानती हूँ?

यदि उत्तर 'नहीं' है, तो शायद दूसरों को समझाने से पहले हमें अपनी विरासत को स्वयं पढ़ने और समझने की शुरुआत करनी चाहिए।

अपनी संस्कृति पर गर्व करना किसी दूसरे का अपमान नहीं है।
अपनी परंपराओं को समझना पिछड़ापन नहीं है।
और अपनी जड़ों से जुड़ना कट्टरता नहीं है।

क्योंकि जिस समाज को अपनी जड़ों पर गर्व नहीं रहता, वह धीरे-धीरे अपनी पहचान खोने लगता है।

आइए, अपनी संस्कृति का मज़ाक उड़ाने के बजाय उसे समझें।
अपनी परंपराओं को आँख मूँदकर नहीं, बल्कि ज्ञान और विवेक के साथ जानें।
और आने वाली पीढ़ी को ऐसी विरासत दें, जिसे वे केवल विरासत में पाएँ ही नहीं—बल्कि समझें, सँजोएँ और सम्मान के साथ आगे बढ़ाएँ

"अपनी जड़ों को जानिए, अपनी संस्कृति को समझिए—क्योंकि पहचान वही टिकती है, जिसकी जड़ें मजबूत होती हैं।"

आचार्या शिखा चंदेल

कलियुग के राम

आज फिर दशहरा के दिन रावण दहन के पंडाल में जाना हुआ;
देखकर वहां का दृश्य
मन बहुत विचलित हुआ।।

आज रावण के दस सिर
जीते जागते,
सामने की दस कुर्सियों पर
विद्यमान थे,
जिनके नाम आज,
विशेष अतिथियों के रूप में नामांकन थे।।

पहले हमारे नेता जी थे,
जो भ्रष्टाचार में सदा लिप्त थे,
दूजे एक अभिनेता थे,
जो एक कांड से अभी-अभी जमानत पर छूटे थे।।

तीसरे पर एक मंत्री थे विद्यमान,
जिन्होंने स्वार्थवश,
कितने किए थे कत्लेआम।
चौथी कुर्सी पर हमारे
विधायक जी,
साम दाम की राजनीति की जीती जागती मूर्ति।।

पांचवे पर एक महंत,
जो संत समाज पर कलंक।
छठवे पर एक अफसर जी, जिनका काम ही
रिश्वतखोरी ही।।

सातवां एक व्यापारी,
जिसे थी मिलावट की बीमारी।
आठवां एक सट्टेबाज,
जिसने किया कितनों का जीवन
खराब।।

नवमें में एक शराब ठेकेदार,
जो थे कितने घरों की बर्बादी के
जिम्मेदार।।
और दसवें थे आयोजक जी,
जो सब की पोल जान कर भी,
कर रहे थे जी हजूरी जी।।

आज पंडाल में एक नहीं,
दस जीते जागते रावण कर रहे थे
अट्टहास,
और मैं उल्टे पांव लौट पड़ा,
करने कलयुग के राम की तलाश

साधना छिरोल्या

वन चौपाल : समीक्षा

रविवारिय केंद्रीय रचनाकार विशेषांक

डॉ. प्रीती जी की बाल साहित्य पर उकेरी गई बच्चों के मन को स्पर्श करती कविताओं का संग्रह वन चौपाल जब मेरे हाथ में आया तो सबसे पहले मेरी सोच यह थी की कवियत्री ने इस काव्य संग्रह का नाम वन चौपाल ही क्यों रखा ।

रचनाकार

डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

जब मैंने चौपाल शब्द के विस्तृत स्वरूप का अध्ययन किया तब पाया कि चौपाल का अर्थ ही यह है की वह होती है गाँव की अदालत, गाँव का न्यूज़ चैनल,गाँव की पाठशाला और सुख-दुख का अड्डा और जब इस परिपेक्ष्य में मैंने कवियत्री के काव्य संग्रह का अवलोकन किया तो पाया की कवियत्री ने अपनी संरचना वन चौपाल में समाज के प्रति बाल मन में उनके कर्तव्य को जाग्रत करने के उद्देश्य को कविता के मूल में रखते हुए जंगल के संरक्षण, संवर्धन , विकास और पर्यावरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को भी व्यक्त कर एक बहुत ही सहज,सार्थक, सरल और अत्यंत महत्वपूर्ण विषयांकित काव्य संग्रह को बच्चों के लिए लिखा है जो बाल मन को शिक्षित भी करती है।

समीक्षक :

नाम : वी के श्रीवास्तव
भोपाल (म.प्र.)

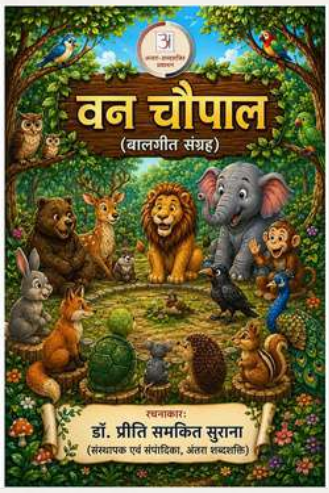

बरगद के पेड़ के माध्यम से 'पत्तों की सीख' कविता में वो लिखती हैं:-

बैठी फिर चौपाल
बोले बरगद दादा
पत्तों से भी सीख
मिले जीवन का वादा

हरे भरे ये पत्ते
सुंदर पाठ सिखाते
त्याग और सहयोग
चुपचाप हमे बताते

'जंगल की पाठशाला' कविता में बहुत खूबसूरती से कवियत्री ने पढ़ाई के महत्व को समझाया है:-

हंस बोली चौपाल
शिक्षा धन है न्यारा
सीखे जो मन लगाकर
चमके भाग्य सितारा

'नन्हा सा बीज' कविता का संदेश व्यापक है :-

बोया नन्हा बीज
सबने नीर चढ़ाया
सूरज की किरणों ने
अंकुर नया जगाया

प्रत्येक कविता समाज में व्याप्त समस्याओं की ओर इंगित करती है यहाँ तक की '**जंगल की चौपाल**', '**बीमार पेड़ का इलाज**', '**टूटा तिनका टूटा खोसला**', '**जंगल में आग**' और '**पानी की किल्लत** 'जैसी कविताओं में समस्याओं को वन चौपाल में बहुत सुंदर पंक्तियों से प्रस्तुत किया गया है।

कविताओं के साथ किये गए चित्रण अत्यंत आकर्षक होने के साथ साथ कविता को पूर्णता प्रदान करते हैं।

वन चौपाल की सभी कविताएं सरल हिंदी में हैं।प्रत्येक कविता पृथक पृथक समाज को जाग्रत करने, मिल जुलकर रहने, पारस्परिक सहयोग से समस्याओं का निराकरण, जल संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण की भावना बाल मन में भरने की प्रेरणा देती प्रतीत होती है ।

मुझे विश्वास है कि सभी कविताएँ बच्चों को बहुत पसंद आयेंगी साथ ही उनके मन पर कुछ अच्छा करने की भावना भी जागृत करेंगी। उनका सृजन इसी तरह उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहे और साहित्य जगत को नई नई कृतियाँ प्रदान करता रहे मेरी यही कामना है।

डॉ. प्रीति जी को इस श्रेष्ठ सृजन के लिये बहुत बहुत बधाई । शुभकामनाएँ ।

अन्तरा शब्दशक्ति

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
सोमवार, 26 अक्टूबर 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

विधा...दोहे

वंदन है माँ शारदे ,मिले बुद्धि वरदान।
करती सबका मान फिर,मिले मुझे भी मान।।
सेवा ,करुणा अरु दया,मानवता का भान।
रिश्तों से जुड़कर प्रथम, कहलाऊं इंसान।।
कवि के मन की वेदना, बांचें सब नर - नार।
छाँव - धूप रचती घनी, टीसों का भंडार।।
कवि के मन की वेदना,उमड़े है सब पीर।
कागज - पन्नों में गढ़े, आँखें पीती नीर।।
कवि के मन की वेदना,नहि जाने संसार।
अभिव्यक्ति भावुक बड़ी, कमतर दुख का भार।।
कलमकार का फर्ज है,सुधरें सबके काज।
अनुचित का विरोध करे,बिखरे नहीं समाज।।
कलमकार का फर्ज है, लेखन से दे सीख।
न्याय पीड़ित को मिले,अपराधी को चीख।।
कलम कार का फर्ज है,समरसता का ध्यान।
लालच बिन लिखता रहे,भारत रहे महान।।
जिसकी जैसी भावना,करता तैसा काम।
मन बोए कंटक सभी,मिल पाए नहि आम।।
जिसकी जैसी भावना,दिखता है संसार।
पाप भरा मन भी कभी,करता सद् आचार।।

डॉ. नवनीता दुबे नूपुर

सावन सोमवार

"माँ,माँ," 18 वर्षीया बेटी रिया दौड़ती हुई आई और बोली- " ये श्रावण मास के सोमवार का इतना महत्व क्यों है? मैंने देखा कि भीड़ की भीड़ मन्दिर जा रही थी। लोग शिव जी पर जल और दूध चढ़ा रहे थे।बिल्वपत्र,बेल और धतूरा भी। मन्दिर के बाहर ही छोटी चारपाई पर रखकर कुछ लोग बिल्वपत्र,बेल और धतूरे के बीज बेच रहे थे। "

"बिटिया! माना जाता है कि श्रावण मास भगवान शिव और माता पार्वती के मिलन का महीना है, इसलिए ये उन दोनों को ही बेहद प्रिय है। श्रावण मास में शिव भक्त भगवान की विशेष पूजा करते हैं। नियमित रूप से मंदिर जाकर शिवलिंग का जलाभिषेक करते हैं। उन्हें बेलपत्र, धतूरा, चंदन और पुष्प आदि अर्पित करते हैं। शिव जी प्रसन्न होते हैं तो जो माँगो, वो दे देते हैं।"

"पर माँ!कुछ लोग तो शिव को अवधूत और भिखमंगा भी कहते हैं। वो कहते हैं कि जिसके अपने पास अपने पहनने के लिए कपड़े तक नहीं, वह किसी को क्या देगा?"

"मेरी लाडो! भगवान शिव... जो तप-जप तथा पूजा आदि से प्रसन्न होकर भस्मासुर को ऐसा वरदान दे सकते हैं कि वह उन्हीं के लिए प्राणघातक बन गया, वह प्रसन्न होकर किसको क्या नहीं दे सकते हैं? जो विश्रवा ऋषि के माँगने पर अपनी पत्नी की बड़े अरमानों से बनवाई स्वर्ण नगरी लंका तक को दक्षिणा में दे सकते हैं, उनसे बड़ा दानी और अपरिग्रही कौन हो सकता है? यह ठीक है कि असुर कहते हैं कि जो स्वयं भिखमंगा है, वह दूसरों को क्या दे सकता है? किन्तु संभवतः उन्हें यह नहीं मालूम कि किसी भी देहधारी का जीवन यदि है तो वह उन्हीं दयालु शिव की दया के कारण है ;अन्यथा समुद्र से निकला हलाहल पता नहीं कब का शरीरधारियों को जलाकर भस्म कर देता। किन्तु दयानिधान शिव ने उस अति उग्र विष को अपने कण्ठ में धारण कर समस्त जीव समुदाय की रक्षा की। उग्र आतप वाले अत्यंत भयंकर विष को अपने कण्ठ में धारण करके समस्त जगत की रक्षा के लिए हिमाच्छादित हिमालय की पर्वत श्रृंखला में अपने निवास स्थान कैलाश को चले गए।

हलाहल विष...साक्षात मृत्यु स्वरूप... भगवान शिव यदि उसे पीकर समस्त जगत को जीवन प्रदान कर सकते हैं, यहाँ तक कि अपने जीवन तक को दाँव पर लगा सकते हैं तो उनके लिए और क्या अदेय रह जाता है? सांसारिक प्राणियों को इस विष का जरा भी आतप न पहुँचे, इसको ध्यान में रखते हुए वे स्वयं बर्फीली चोटियों पर निवास करते हैं।

विष की उग्रता को कम करने के लिए साथ में अन्य उपकारार्थ अपने सिर पर शीतल अमृतमयी जल किन्तु उग्रधारा वाली नदी गंगा को धारण कर रखा है।"

"माँ ये भस्मासुर , विश्रवा ऋषि,हलाहल विष का पान...ये क्या है?"

"लम्बी कहानियाँ हैं। अभी मुझे पूजा की तैयारी करनी है। बाद में आराम से बताऊँगी।"

"माँ! बस एक बात अभी बता दो । क्या श्रावण मास में सोमवार के दिन का खास स्थान है?"

"हाँ बिटिया! वार अनुसार सोमवार सुधांशु अर्थात चन्द्रमा का ही दिन है। चन्द्रमा की पूजा भी स्वयं भगवान शिव को स्वतः ही प्राप्त हो जाती है क्योंकि चन्द्रमा का निवास भी तो भगवान शिव के सिर पर ही है।" **"माँ! सावन के सोमवार का ऐसा क्या महत्व है? "**

"तू भी ना रिया। इतना कुछ तो बताया। कहा जाता है कि सावन के सोमवार का व्रत रखने से मनवांछित कामना पूरी होती है।सुहागिन महिलाओं को सौभाग्यवती होने का आशीष प्राप्त होता है और पति को लंबी आयु प्राप्त होती है। वहीं अगर कुँवारी कन्याएँ ये व्रत रखें तो उन्हें सुयोग्य वर की प्राप्ति होती है।"

"माँ! क्या आप भी ये व्रत करती थीं?

"हाँ,करती थी। पर तूने ये क्यों पूछा?"

" कुछ नहीं,बस ऐसे ही। तभी आपको इतने अच्छे... " रिया शरमा कर बोली।

"अब से मैं भी सावन के सोमवार के व्रत रखूँगी। बल्कि सोलह सोमवार के व्रत रखूँगी।"

कहते हुए रिया वहाँ से भाग गई।

"मैं तेरे दिल की बात समझ गई रिया" ,माँ ने दिल ही दिल में कहा।

राधा गोयल

कविता

अक्टूबर पंद्रह पार कर गया
ओ हरसिंगार, कहाँ रह गए तुम
फैली हुई तुम्हारी पंखुड़ियों को
देखने की लालसा जग रही।

अक्टूबर की गुनगुनी ठंड
आ चुकी है, जिसे महसूसते हुए
लोधी गार्डन में
अलसुबह की मॉर्निंग वॉक में
कदम कुछ धीमे हो जाते हैं।

गेंदा, गुलदाउदी खिल रहे हैं,
माली नए मौसमी फूलों की कतारें
सहेजने में व्यस्त दिख रहा है,
दशहरे की आहट
हवा में घुल रही है,
काश और शिउली के फूलों की तरह
मन में भी
कुछ उजली उम्मीदें
लहराने लगी हैं।

बस तुम नहीं हो
हरसिंगार,
तुम्हारी खुशबू के बिना
अक्टूबर कुछ अधूरा-सा लगता है।

कभी तो
सुबह की उस पगडंडी पर
तुम्हारी पंखुड़ियाँ बिखरी मिलें,
मैं उन्हें उठाऊँ नहीं,
बस कुछ देर
उनके बीच चलता रहूँ
और महसूस करूँ
कि प्रेम शायद
इसी तरह चुपचाप
हमारे रास्ते में उतरता है।

अक्टूबर बीत रहा है
और मैं अब भी
तुम्हारे खिलने की प्रतीक्षा में हूँ,
हरसिंगार!

मुकेश कुमार सिन्हा

पिता का महत्व

परिवार और बच्चों के जीवन में पिता का होना एवं उनका महत्व सबसे बड़ा होता है | पिता वह मजबूत स्तम्भ है जिसके आधार पर पूरा परिवार एवं बच्चों का जीवन टिका रहता है | पिता वह वटवृक्ष के समान है जिसकी छाया में पूरा परिवार का जीवन निर्वाह होता है बिना किसी स्वार्थ के | पिता अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए, उनकी सुरक्षा के लिए, उनकी खुशियों के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर देता है |

पिता अपने बच्चों एवं परिवार के लिए माकान के उस टीन के छत के समान है,जो बरसात में पूरा भींगता है , गर्मी में पूरा तपता है और ठंड में पूरी ठंड सहन करता है | स्वयं अपनी आवश्यकताओं की परवाह न कर कडी मेहनत कर अपने बच्चों एवं परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में लगा रहता है | अपने परिवार और बच्चों के लिए अपने अर्जित धन में से भी थोडा थोडा बचत कर भविष्य के लिए संचित करने का प्रयास करता है |

पिता बच्चों के लिए रोटी है,कपडा है, माकान है, और उनकी इच्छाओं की उड़ान के लिए बड़ा आसमान है | पिता के कारण ही बच्चों के ढेर सारे सपने होते है, और उन सपनों को पूरा करने का साधन भी होतें हैं | यदि पिता का आशीर्वाद बच्चों पर होता है, तो सारी मुशीबते मीलों दूर हो जाती है |

पिता की मुख्य भूमिकाएं:-

१) सुरक्षा एवं सहारा:-- पिता बच्चों की प्रत्येक परिस्थितियों में ढाल बनकर सुरक्षा करते हैं | जिससे हर मुश्किलें हल हो जाती है |
२) मार्गदर्शन:-- सही और गलत की पहचान कराते हुए जीवन के फैसले लेना सिखातें है |
३) आर्थिक मजबूती:-- परिवार की जरुरतों को पूरा करने के लिए कडा परिश्रम करते हैं |
४) आत्मनिर्भर :-- बच्चों को मुश्किलों का डटकर सामना करना और निर्भर बनाना सिखाते हैं |
५) अनुशासन:-- जीवन में नियम संयम से रहना और आचरण का महत्व को समझाते है |
६) प्रेरणा :-- पिता की मेहनत को देखकर बच्चों को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है |
७) भावनात्मक संबल :-- संकट के समय पर बच्चों को मानसिक रूप से मजबूत करने का अहसास कराते हैं |

इस प्रकार पिता बच्चों के उज्ज्वल भविष्य को बनाने में, उनकी सुरक्षा में, खुशियों को पूरा करने में अहम भूमिका होती है साथ ही पिता अपना पूरा जीवन अपने बच्चों एवं परिवार के लिए समर्पित कर देता है |

शिवशंकर दुबे (गंगेले)

दीप हमें सिखला रहा

व्यर्थ कभी जाता नहीं, किया गया संघर्ष।
अंधियारे में दीप ने, हँस हँस बांटा हर्ष।।

नन्हें दीपक ने दिया, एक बड़ा सन्देश।
सदा फैलती त्याग की,अनुपम कीर्ति अशेष।।

रखा ध्यान में लक्ष्य को,और जला अविराम।
एक दिए ने कर दिया, तम का काम तमाम।।

लाख गुना हो आयतन, मीलों हो विस्तार।
हुई दीप के सामने,अंधियारे की हार।।

जला आखरी साँस तक, खूब निभाया धर्म।
दीप हमें सिखला गया, क्या होता है कर्म।।

मैं हूँ वंशज सूर्य का,तम को हरना काम।
नन्हा सा मैं दीप हूँ, जलता हूँ अविराम।।

जलकर रौशन कर गया, जग में अपना नाम।
दीपक आया किस कदर ,मानवता के नाम।।

मिला दीप की ज्योति से,ऊर्ध्व गमन का बोध।
केवलज्ञानी कर सका, इसी द्रष्टि पर शोध।।

रत्तीभर आया नही, अंधियारे को रास।
दीपक ज्योति प्रकाश ने,मिलकर रचा उजास।।

जली वर्तिका दीप में , अपना नेह निचोड़।
अंधियारा पीछे हटा, अपने हाथ झिंझोड़।।

जगर मगर दीपक जले, हरे कलुष तम शोक।
जैसे प्राची से निकल , तम हरता आलोक।।

मनोज जैन

शरद पूर्णिमा !!

शरद पुन्यू आई सखी,
चाँदनी रात संग लाई।

राधा संग गोपाल रास रचाएँ,
मधुर धुन मुरली की बाजे।
गोविंद संग गोप-बालाएँ,
झूम-झूम रास रचाएँ।

मोहन नाच रहे राधा संग,
छवि देख मन हर्षाए।
बिसरे वृंदावन के वासी,
भूले सारे जग के बंधन रे।

शरद पुन्यू आई सखी,
चाँदनी रात संग लाई।

धरती पर लक्ष्मी जी आईं,
संग खुशियाँ ढेर लाईं।
वरदान खुशियों का देने,
आज वो घर-घर आईं।

शरद पुन्यू आई सखी,
चाँदनी रात संग लाई।

लक्ष्मी जी भ्रमण पर,
देखें कौन जागे, कौन सोए।
शशिधर अमृत बरसाए,
देखें कौन खीर का थाल सजाए।

शरद पुन्यू आई सखी,
चाँदनी रात संग लाई।

दीप जला सुख-समृद्धि का,
महका हर घर-आँगन।
लगा भोग खीर का,
फिर पाया जन-जन प्रसाद।

शरद पुन्यू आई सखी
चाँदनी रात संग लाई

पुष्पा अरविंद शर्मा

अधूरी जानकारी..

जानकारी अधूरी हो तो,
अवसर को अवसाद में
बदलने में समय नहीं लगता ।

अधूरे तथ्यों के आधार पर
लिए गए निर्णय ,
कभी-कभी संभावनाओं के द्वार पर
समय से पहले ही बंद कर देते हैं ।

जो स्पष्ट नहीं है
उसे सत्य मान लेना
भ्रम को जन्म देता है ।
और भ्रमित मन
अवसर में भी
आशंका तलाशने लगता है ।

इसलिए ...
जानकारी पूरी रखिए ।
दृष्टि स्पष्ट रखिए ।
क्योंकि अधूरा ज्ञान
अवसर से अधिक
अवसाद को जन्म देता है ।।

निक्की निषाद

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
गुरुवार, 29 अक्टूबर 2026

महत्वाकांक्षा

महत्वाकांक्षाए जब बलवती हो जाती है तो इंसान पतन की ओर अग्रसारित हो जाता है , कहते हैं,,,,," अति सर्वत्र वर्जियते"
शोभा खाने का निवाला निगलते हुए सोच रही थी. क्या है उसके पास ?
कमलेश की छोटी सी तनख्वाह से किसी तरह घर का गुजारा होता है, अंशु एवं हेमा की फीस एवं कोचिंग की फीस जमा करने में ही लगभग आधा वेतन चला जाता है।
घूमने फिरने तथा बाहर खाने जाओ तो घर का बजट खराब हो जाता है ,बाहर खाने भी जाओ तो छोटे-मोटे रेस्टोरेंट्स से ही काम चलाना पड़ता है। पंच सितारा होटल एवं आलीशान होटल में तो जाने की हैसियत ही नहीं।
दूसरी तरफ उसकी बहन निशा को देखो,,,, आलीशान बंगला ,,, नौकर -चाकर सभी सदस्यों के लिए अलग-अलग गाड़ियां उनकी शान शौकत की तो कोई तुलना ही नहीं। जीजा रोहित कि अपनी मल्टीनेशनल कंपनी है। हजारों कर्मचारी उनकी देखरेख में काम कर रहे हैं ,उनका रहन-सहन जीवन स्तर कितना उच्चस्तरीय है।
वे तो अक्सर बाहर बड़े-बड़े आलीशान होटल पंच सितारा होटल में ही खाना- खाते हैं, और दीदी भी सोने एवं हीरो के जेवरो से तथा महंगी साड़ियों से लदी रहती है। उनका जीवन कितना सुखमय है। यह सब सोचते हुए शोभा के मुंह में खाने का निवाला बड़ी मुश्किल से जा रहा था। उसके मन के भीतर सैलाब की तरह उथल-पुथल मची थी महत्वाकांक्षाए तेजी से हिलोरे मार रही थी,
उसे अपने जीवन पर तरस आ रहा था।
उसने अपने आप को सहज करते हुए अपने पति कमलेश से कहा ,,,,,, वह क्यों नहीं जीजा रोहित की कंपनी ज्वाइन कर लेते। किंतु कमलेश ने बड़े प्यार से कहा,,, , कि वे अपने काम से बहुत खुश है, उन्हें उनके ऑफिस में मान- सम्मान सब कुछ मिलता है, और वेतन भी इतना मिल जाता है कि वे अपने तथा परिवार की जरूरतों को पूरा कर सकें, उन्होंने कहा कि इंसान को बहुत ज्यादा महत्वाकांक्षी नहीं बनना चाहिए ।

यह कहते हुए अपनी स्कूटर पर किक मारने लगे दो- चार किक मारने पर भी स्कूटर स्टार्ट नहीं हो रहा था।
स्कूटर काफी पुरानी थी। तभी शोभा ने क्रोध में कहा,,,, वह आज दीदू से मिलने जाएगी ,एक ही शहर में रहने के बाद भी कितना दिन हो गया उससे मिले ।
पति कमलेश को समझने में देर न लगी, कि आज तो शाम को बड़ा बवाल खड़ा होगा। आज तो उसे काफी खरी-खोटी सुननी पड़ेगी।
क्योंकि वहां की शान -शौकत ,तड़क--भड़क तथा धन- दौलत देखकर श्रीमती जी की महत्वाकांक्षाए बढ़ जाती है।
लेकिन क्या करें? मायके के नाम पर शोभा की दीदू ही तो है।
बचपन में मां बाप के गुजरने के बाद दीदू ने मां-बाप की जगह ली।
कमलेश के ऑफिस जाने के बाद शोभा ने एक बैग में पैसे- रुपए ,जेवर जो कुछ उसके पास था, सब रख लिया,
और दीदू के पास जाने के लिए तैयार हो गई ,उसने सोचा दीदू के सहयोग से वह किसी कंपनी में एक बड़ी डील करेगी तथा उनके सहयोग से पार्टनरशिप में रहेगी।
यही सब सोच के वह दीदू के घर पहुंची जैसे ही गेट खोल कर दरवाजे पर पहुंची होम डोर बेल बजाने की सोची वह ठिठक गयी ।
अंदर से जोर जोर से आवाज आ रही थी। दीदू रो रही थी और जीजा से कह रही थी ,,,कि आपको शर्म नहीं आती रात- रात भर ड्रिंक करते ,बच्चों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा कभी सोचा रात- रात भर गायब रहते हो।
सालो हो गए होंगे एक दूसरे के साथ खाना खाए, एक दूसरे के साथ समय बिताएं ,एक दूसरे के साथ मिलकर खुशियां मनाते हुए,, इतना धन दौलत शोहरत होने के बावजूद भी जीवन में अधूरापन है।,परिवार बिखरा हुआ है।
इससे अच्छी तो उसकी बहन शोभा है।
जिसका एक छोटा सा परिवार उसका पति उसे बेहद प्यार करता है, छोटी-छोटी खुशियों का एक दूसरे से इजहार करते हैं। बच्चे भी पढ़ने में तेज तथा संस्कारी है ।धन दौलत की कमी होने के बावजूद भी उनके जीवन में खुशियां ही खुशियां है ।
जानते हो ,,,,,
मैंने बेटे हनी से जब पूछा कि वह हॉस्टल से कब आएगा, तो उसने जवाब दिया ,,,,आप स्वयं समाज सेवी संगठन से जुड़ी हो ,तो आपके पास वक्त कम ही मिल पाता है। और पिताजी तो कभी- कभार घर पर रहते हैं ,अतः जब मौसी के बच्चों की छुट्टियां होंगी, तो कुछ दिनों के लिए उन्हीं के घर आऊंगा ।
और उनके साथ कुछ समय व्यतीत कर लूंगा।
यह सब सुनकर जीजा बड़ी बेशर्मी से बोले ,,,,जो कुछ तुम्हें चाहिए था, वह सब कुछ तुम्हें देता हूं धन -दौलत, मोटर -गाड़ी।
तुम्हारे एक इशारे पर नौकरों की फौज खड़ी हो जाती है। तुम जैसी मध्यमवर्गीय परिवार की लड़की से विवाह किया केवल तुम्हारी सुंदरता देखकर।
तुम्हें भी तो केवल धन- दौलत एवं सुख पाने की महत्वाकांक्षा थी।
जो आज सब कुछ है। फिर मेरी जिंदगी में दखलअंदाजी क्यों ?
दरवाजे के बाहर शोभा यह सुन रही थी, यह सब सुनकर ,उसके पैरों से जमीन खिसक गई ।
उसको तो अपने कानों पर यकीन ही नहीं हो रहा है ।
उल्टे पांव वह वहां से वापस आ गई। आज उसकी बलवती होती महत्वाकांक्षाए मर गई थी।
उसे अपने पति कमलेश और बच्चों पर नाज हो रहा था उसे महसूस हो रहा था ,,,,,जो खुशी उसके पास है,, उसे धन दौलत से नहीं खरीदा जा सकता। उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया और कहा कि,,,, ईश्वर उसे इतना महत्वाकांक्षी कभी ना बनाएं कि सुख-चैन सब कुछ नष्ट हो जाए।

आराधना श्रीवास्तव

शरद की रात आई है

शरद की रात आई है,
उमंगें दिलों में साथ लाई है..

हर दिल में उत्साह भरा है,
और चांद यह सब देख अपनी,
सोलह कलाओं सहित खिला जा रहा है..

कहीं रास की तैयारी है,
तो कहीं खीर में केसर गमक रही है..

पकौड़ों की खुश्बू संग संगीत की धुन पर,
मच रहा है सबकी छतों पर शोर ही शोर..

मध्य रात्रि जब चांद आएगा शबाब पर,
तब होगी देवताओं द्वारा अमृत की बरखा..

अमृत वर्षा में कर महा-स्नान,
दादी बगैर चश्मे के सुई में धागा पिरोएँगी ..
फिर खीर का अमृत मय प्रसाद,
हम सबको खिलाकर..

शरद पूर्णिमा की बधाइयाँ बांटेंगी...

सुषमा अग्रवाल

उज्जैन : महाकाल की नगरी

महाकाल की पावन धरती,
उज्जैन नगर निराला है।
क्षिप्रा की कल-कल धारा में,
भक्ति-भाव का उजियारा है॥

अवंतिका का गौरव गाता,
हर मंदिर का पावन द्वार।
शंख-घंटियों को सुनकर,
पुलकित होता है संसार॥

भस्म आरती की दिव्य छटा,
मन को करती है अभिभूत।
शिव के चरणों में झुक जाता,
अहंकार और मोह-विभूत॥

विक्रम की वीरता की गाथा,
कालिदास का अमर सम्मान।
ज्ञान, धर्म और संस्कृति का,
यहाँ सजा अनुपम उद्यान॥

सिंहस्थ का अनुपम मेला,
लाता जन-जन में उल्लास।
साधु, संत और भक्तों से,
भर जाता श्रद्धा का आकाश॥

क्षिप्रा तट पर दीप जलाकर,
मन पाता है नई उड़ान।
महाकाल की कृपा बरसती,
होता जीवन धन्य महान॥

भारत की संस्कृति का गौरव,
यह नगरी अनुपम, अविराम।
उज्जैन की महिमा गूँज रही,
युग-युग तक होगा इसका नाम॥

हेमलता शर्मा

वलय

नीचे पाताल लोक में अभी भी अंधेरा था,
जानवरों की खाल की गंध,
आदमी और औरत की जगह।
उस समय, रात के आसमान से
पहाड़ की चोटी पर,
तारों का एक झुंड ध्यान की जगह पर उतरा,
बहुत चमकीले रंग के आदमियों का एक झुंड,
घाटी, पहाड़ी, सख्त पत्थर की ज़मीन को छूते हुए,
करुणा की रोशनी धीमी हो गई।
शायद ज़िंदगी का मतलब है
किसी आधे-अचेतन, आधे-बेहोश
इंसान का गिरना
और उसके आगे बढ़ने की
लगातार कोशिशों का एक-एक रोता हुआ घेरा बनना।

निर्मल रॉय

मन के भेद खोलो

चलो इस दिखावे को खत्म करते है
मन के भेद एक दूसरे से साझा करते है
मुझसे मुस्कुरा कर बात करने वाले तुम
मेरे पीठ पीछे बुरा कहते हो न
मेरी खामियां मुझे बताने की जगह
अनजानों के सामने बया करते हो न
वो मुझे हर वक्त अपना कहने वाले तुम
महफिलों में मुझे अंजान कहते हो न
मै तुम्हारे साथ हु ये कहने वाले तुम
हवाओं की तरह रुख बदलते हो न
हर खुशी में मेरे साथ हंसने वाले तुम
थोड़ी सी तकलीफ में मुंह बनाते हो न
मेरा साथ खुशनसीबी जताने वाले तुम
दिल में ज़रा खफा से हो न
जब है तकलीफें तुमको
मन में हो क्यों सवाल रखते
भेद मन के खोलो क्यों न?

वाणी गोलछा

सांझ की आस

पंजाब के रूपनगर (रोपड़) जिले में गोचर गाँव में सूरज शिवालिक पहाड़ियों के पीछे आहिस्ता-आहिस्ता सरक रहा था और वहाँ आसमान का रंग गहरे नारंगी से सिंदूरी होता जा रहा था। स्थानीय बोली में पिंड के लोग इसे गोधूलि बेला कहते हैं। अब उतनी गायें तो रही नहीं जिनके खुरों से उड़ती धूल ढक ले विदा ले रही रश्मियों का उजाला और शाम के उतरने का अहसास हो लेकिन कंवलजीत(जीते) के लिए हर रोज़ यह बेला, शाम के धुँधलकों के साथ पूरे चाँद को ले आती हैं।

कांधे पर चरी का गट्ठा उठाए आ रही सुखविंदर (सुक्खी) की पायल के घुँघरू की रुनझुन, जीते की धड़कनों को बढ़ा देती है और वो दार जी से नहर के पास जाने का कोई नया बहाना बनाता है।

दार जी ने केश और दाढ़ी, धूप में सफेद नहीं की है। पोते को गहरी नज़र से देखकर मुस्कुरा देते हैं और कहते हैं, "जा पुत्तर! मार आ फेरा उधर। पिंड लौटते मवेशी अक्सर फसल पे मुँह मार जाते हैं।"

पता नहीं जीते जानता है या नहीं कि दार जी किस मवेशी और कौनसी फसल की बात कर रहे हैं परन्तु दार जी धवल दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए उस गोधूली बेला को याद करते हैं जब उनकी सुजान कौर अपने खेत से पिंड के रास्ते पर बैलगाड़ी से गुजरती थी और बेलों के गले के घूँघरमाल जैसे उनका नाम लेकर बुलाते थे।

हाथ का काम छोड़ वो भागते थे और पता नहीं क्यों बैलगाड़ी खींच रहे बैलों की चाल सुस्त हो जाती थी... कभी-कभी तो बैलगाड़ी का पहिया पगडंडी से नीचे उतर जाता था और वो सुजान की मदद करते थे पहिया सड़क पर लाने में जबकि, वो बहाना होता था सिमटती सांझ में अपनी सुजान को नजदीक से निहारने का।

अब जीते में खुद को देखते हैं और सुक्खी में सुजान, नज़र आती है और जीवन की दोपहर में शाम की आहट आने लगती है। कौन बदल सकता है कुदरत का निज़ाम? जो उदित हुआ है उसे अस्त होना ही है। जीते के बाप और अपने बेटे की ज़िन्दगी का दिया तो सरहद पर बुझते देखा है उस तरफ़ से आई जहरीली आँधी में जो दुश्मन की राईफल की गोली से उठी थी।

हर सुबह जीते को फौज में भर्ती होकर अधिकारी बनने के लिए कसरत कराते हैं, 2 मील दौड़ाते हैं लेकिन हर शाम जब सुक्खी को घर लौटते देखते हैं, उसके पीछे-पीछे चल रही गोधूलि भी दिखाई देती है जो उजाले को पीकर, अँधेरों में बदल रही है। मन विचलित होता है लेकिन फिर रात में, बेटा सपने में आ खड़ा होता है, खून से सुर्ख हो रही वर्दी और राइफल के ट्रिगर पर उँगली कसते हुए... गोधूलि, सिमटने लगती है रात में । और रात भले ही अँधेरी या पूरे चाँद वाली हो, उजली सुबह में बदल जाती है।

फिर जीते को नींद से जगाकर निकल जाते हैं बेटे से किए वादे को सच में बदलने के लिए।

पसीने से कसरती बदन पर चिपकी टी-शर्ट और दाढ़ी में सिमटी बूँदों से तसल्ली मिलती है कि छट रही है गोधूलि, रात बीतने को है और पूरब में शिवालिक के शिखर पर उगते सूरज की रश्मियों ने शामियाना लगा लिया है।

जीते की माँ प्रभजोत, दार जी को चाय और जीते को दूध का गिलास देकर शहीद मेजर पति की तस्वीर को देखती है। मन ही मन दोहराती है, तुम नहीं हो लेकिन हिन्दुस्तानी फौज आज भी हमारे टब्बर का हिस्सा है। बहुत जल्दी अपना जीते वर्दी पहनेगा और उस मनहूस गोधूली को सुबह में बदलेगा जिसने मुझसे मेरा सूरज छीना था।

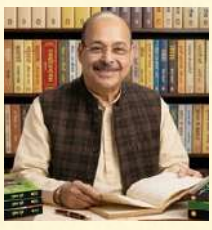

मुकेश दुबे

किसी रोज़

किसी रोज़
फिर तुमसे मुलाकात होगी।

फिर शायद
थोड़ी बात होगी।

होगी थोड़ी जान-पहचान,
न बनेंगे फिर कभी अनजान।

थामेंगे हाथ
एक-दूसरे का,

और चल देंगे
पूरा रास्ता।

और सुनाएँगे
दुनिया को हमारी दास्तान।

अधूरी हो या पूरी,
अच्छी हो या बुरी।

खास हो या आम थोड़ी,
खुशहाल हो या हो दुखभरी।

जैसी भी हो,
होगी वो अपनी हकीकत सी।

तो इस सब के लिए,
मिल लेंगे किसी रोज़ फिर कभी।

जाह्नवी मालवेकर